पंचम अध्याय

व्याख्या

व्याख्या

(१)

सब ग्वालन दूध से भरे गागर सब छोटी पहाड़ियों में :एकलादी के पास: थे।

भवानी भवन :मनुष्य की: चांदा लाकर दुकान के दरवाज़े पर दूध को :ले जाने की सुविधा के लिए: रस्सी से संवार रही थीं।

भवानी मांझेदार में इसीलिए याद कर रही है :दूध को कहां-कहां ले जाना है:।

भवानी ने सिर पर दूध की छोटी-सी हेप रख ली :है:।

:भवानी: उस मांझेदार से चलती जा रही है।

:भवानी के रास्ते की: गली में पागल :हुआ: खूनी हाथी राजा मल्हड़ का झूम रहा है :मदमस्त है:।

भवानी गली में अनुरोध करती है --

'भैया, मेरी राह का :बाधक: हाथी अलग कर दो।

:आज मुझे पहले से ही :आने में: :कुछ: देर हो गयी है।

महलों :बड़े घरों: के लोग मेरी धवल गायों के दूध की प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

जब हाथी के महावत बैठे से :कहलादी: जम कर जवाब करते हैं --

'हवे:साधारण: हाथी :रूप में संबोधित: मत कहो यह तो राणाओं के राजा मल्हड़ का :विशेष स हाथी है: है।

:मदमस्त होने से यह: खूनी :हाथी: गली में झूम रहा है।

:इसीलिए: बेटी, तू किसी और :गली: से चली जाओ।

: एकलादी के हाथी हटाने की जिद से क्रुद्ध होकर महावत कहता है:

"इसे: गूजर जाती में तुम्हारे जैसी जिद्दी लड़की :मैंने: नहीं देखी है।"

(2) : जब एकतादी स्वयं हाथी को रास्ते से हटाने का निश्चय किया, इसीलिए":
भवानी ने दूध की दहेली को :अच्छी तरह:से: सिर पर संवार लिया:
अपने गुरुजन का भवानी ने स्मरण किया।
:वह: दाहिने पांव के अंगूठे से हाथी :हाथी: की बेड़ी को दबा :खींच: रही है।
:कुछ ही देर में: हाथी को गली में पछाड़ दिया : रास्ते से अलग कर दिया: मार्ग-
बनाकर: उसी गली के बीच से :वह: चली जा रही है।
महावत भागते हुए राजा के दरबार पहुंचे :गये:।
:महावत ने कहा:--" गूजर के घर की बेटी :एकतादी: की शक्ति :के सम्बन्ध में:
अब क्या हूं कहूं ?
:अब इसी में अनुमान लगा लीजिये कि उसने :गली में मेरे मोती गजराज का मान घटा
दिया है:परास्त करके:।"

राजा महावत की :विचित्र: बात को किस तरह समझे :कैसे विश्वास करे: ।--
"मेरे भाई, क्या :तुमने हाथी की खुराक कम कर दी है, :या पानी: जितनी मात्रा
में पिलाना आवश्यक है उसे: भूलवश कम कर दिया है ? क्या कारण है :जो: बेटी
:एकतादी: ने अब हाथी को हरा दिया है ? इसका :पूरा: विवरण समझाओ।"
तब महावत ने राजा से किसी तरह अरज किया :कहा: --
"गूजर की बेटी की जादूगरी :के बारे में: अब क्या कहूं ?
:उस समय मंत्र: पढ़-पढ़ कर :जैसे: उसने मोती गजराज को माला मारा,
जिससे :उसने: गली में सभी लोगों के बीच हाथी :हाथी: को हरा दिया।
:जब वह इतनी शक्तिशाली है तब वह क्या नहीं कर सकती, इसीलिए:
राजा अब तेरी गद्दी कुछ ही दिनों के बीच में टूट जायेगी।
:अगर इस मुसीबत से छुटकारा चाहते हो तो: गूजर की लड़की एकतादी और तुम कौन
कुंवर नन्दलाल :दोनों की: बल पूर्वक सगाई करवा लीजिये।
और :उसे: अपने रनिवास की बहू बना लीजिये।
अन्यथा तुम्हारी सारी राजधानी मिट :नष्ट हो: जायेगी।
इसीलिए :मेरे अनुरोध करने: मनाने से धर्म द्वार पर मान जाइये।"

:राजा ने सहमत होकर: सूजर के द्वार पर :घर के लिए: राजा ने घुड़सवार भेज दिये।
एक :व्यक्ति: सूजर के लिए दो रथ दो गाड़ियों के लोग दौड़ाये ले गये।
:उनके द्वार: सूजर के टोड़ा फांक की खड़ी :घेर: ली गयी है।
:घुड़सवारों ने कहा: --'गरूडध्वज ने हुक्म फरमाया है,
:इसी लिए: सूजर :तुम्हें: अब तत्काल राजधानी के लिए बुलाया गया है।'
:सूजर ने कहा:--' :मैंने राजा के बिना आज्ञा के: न :तो: राजा के खेत जोते हैं
और :न: मेरी गाय ने किसी के या उसके: धने धान को:ही: चर लिया है।
:फिर किस लिये: किस कारण वश मुझे अब रनिवास :राजा के पास: में बुलाया
जा रहा है?'
:सूजर की इन्कारी पर राजकर्मचारियों ने कहा:--':राजा के सम्मानपूर्ण बुलावे पर
चलने से: सब के साथ चलने से :तुम्हारा :यश बढ़ेगा: लोग-बाग तुम्हें राजा का कृपा-
पात्र समझ कर विशेष सम्मान देंगे जब कि इन्कार करने पर: तुम्हें अपयश मिलेगा,
:बलपूर्वक लेजाने पर,लोग-बाग समझेंगे तुम राजा के प्रति अपराधी हो: ।
:तुम्हें जो कुछ भी कहना-सुनना: - अपनी सफाई अब राजा गरूडध्वज से :ही: देना
:क्योंकि हम मात्र राजा के आज्ञापालक हैं: ।'
:सूजर ने कहा:-':मेरे: पांव में जूते नहीं हैं, गांठ में :खर्च के लिए: पर्याप्त पैसे नहीं
हैं, सिर के लिए बैगनी पगड़ी नहीं है,
:और किस सवारी पर: सवारी के अभाव के कारण: चढ़ कर राजा गरूडध्वज को
सलाम करूं? :राजा से ऐसी खराब हालत में कैसे मिलूं, ऐसी स्थिति में मिलना-
मिलाना दोनों के लिए लज्जाजनक है।:'
:लेकिन राजकर्मचारियों से विवश होकर घर में सूजर ने कहा:--' रनिवास :राजा के
घर: में मेरा बुलावा है :बुलाया गया: किया गया है।'
बेटी ने:पिता को पहिनने के लिए: जूते दिये, :खर्च के लिए: गांठ में बांधने के लिए
पर्याप्त पैसे दिये।
सूजर ने सिर पर बैगनी पगड़ी बांध ली।
रनिवास में मिलने के लिए सूजर चल दिये।
:सूजर के राजमहल पहुंचने पर: राजा ने : बैठने और सूजर को सम्मान देने के लिए:
कुर्सी मोढ़ा डलवाया।

:उसके बाद: अब राजा गूजर चन्दीले को समझा रहा है -

"मेरे भाई, तुम्हारी बेटी रुक्मादी है और मेरा बेटा कुंवर नन्दलाल है,

इसीलिए :दोनों का : धर्म संगत ब्याह रचा दीजिये ।"

राजा के धर्म द्वार पर गूजर हाथ जोड़ कर विनती करता है -

"राजा, तुम तो प्रजा के माता-पिता हो ।

जैसे यह मेरी बेटी है वैसे ही अन्य सभी जाति के लिए :उनकी पुत्री के समान: भी है । :इस तरह का असंभव प्रस्ताव करके: मुझ पर :आप: विचित्र दंड मत लगाइये ।

:क्योंकि: भात कोरा हो तो उसे रांधा जा सकता है :लेकिन: एक बार के: रंधे हुए भात को दुबारा नहीं रांधा जा सकता है ।

:मेरी: बेटी :रुक्मादी: ब्याही जा चुकी है :इसीलिए: अब कैसे :दुबारा: दे सकता हूं: दुबारा ब्याह कैसे कर सकता हूं: ?

राजा :अगर तुम: कन्या पैसा मांगते हो तो :मैं तुम्हारा: छकड़ा :बैलगाड़ी पैसा: भरवा देता ।

राजा :अगर तुम: गाय चाहते हो :तो उसे: बुलवाकर :अपने यहां: बंधवा लीजिये।

:लेकिन ऐसा अधार्मिक, अनैतिक विचित्र ब्याह के प्रस्ताव का: अनोखा दंड मुझसे सहा नहीं जाता है ।

:इसीलिए मैं: तुम्हारी राजधानी :राज्य: छोड़ दूंगा ।

:राजा ने ब्याह के इन्कार के प्रस्ताव से क्रुद्ध होकर गूजर के : हाथ में हथकड़ी, पांवों में बेड़ी, गले में तौक डलवा दिया ।

गूजर की देह में हरे बांस बज रहे हैं, :उसे पीटा जा रहा है: ।

अन्त में विवश होकर वह कहता है--" राजा हमें छोड़ दीजिये और अपने कुटुंब-परिवार में :वापस: जाने दीजिये ।

मुझे कुटुंब परिवार के लोगों से सलाह लेने का :मौका: दीजिये ।

मैं :अपनी बेटी की उनकी सलाह से: सगाई तुम्हारे कुंवर नन्दलाल के साथ कर दूंगा

:गूजर की बात का विश्वास करके: राजा ने भरे दरबार में गूजर चन्दीले को मुक्त करवा दिया ।

गूजर अपने धर्म द्वार पर टूटी खाट में जाकर लेट गये ।

दरवाजे पर बेटी बात :कारण: पूछ रही है --

बाबुल :पिता:, क्या तुम्हें सिर में दर्द हो रहा है या बहुत जोरों का बुखार चढ़ आया है ?

बाबुल, टूटी खाट पर क्यों लेटे हो ?

:पिता दुःखी होकर कहता है: -"बेटी तू जन्म से :ही: मर जाती, :या: तुझ पर पाथरों की गाज गिरती :जिससे तू नष्ट हो जाती: बेटी तुमने राजा से :मेरी: शत्रुता करा दी है ।"

बेटी पिता के बदले व्यवहार को किस तरह समझे :समझ नहीं पाती: ।-

"पिता, मैं भली द्वार पर :तुम्हें: क्यों बुरी लगने लगी ?

जिससे :तुम: मुझ पर पाथरों की गाज गिरा रहे हो ।

पिता घर में बेटी की :बुरी बात: समझा रहे हैं -

"गली में उस दिन तुमने हुली (५) :हाथी: को हरा किया था,

जिसकी वजह से राजा बारम्बार तेरी सगाई मांग रहे हैं ।

राजा :के यहां तेरी: सगाई कर देने के बाद :मेरे यहां कोई भी : घड़े का पानी नहीं पियेगा । :बिरादरी से निकाल दिया जाऊंगा: ।

:इस कारण: अभागी, मेरा कुटुंब-परिवार :सभी: छूट जायेगा ।

मैं कैसे :लोगों से: :किसी को: अपनी शक्ल दिखाऊंगा :लज्जा प्रतीत होगी:,

कैसे देश में :लोगों से: खिंच कर :अलग-अलग: रह सकूंगा ?

चारों तरफ का डाकू राजा द्वार पर झुक से ले रहे हैं ।

इसीलिए बेटी अब :मैं: टूटी खाट पर लेटा हूं ।"

बाबुल के उत्तर पर बेटी प्रत्युत्तर में कहती है -

"मेरे पिता तुम सुख की नींद सोवो ।

मैं राजा गढ़वला पर हमला किये देती हूं ।

उसे पराजय करने के साथ उसकी गढ़ी को बिल्कुल नष्ट करके, गढ़ी को ऊसर बना कर जोत-बुवाकर :उसमें: धान बो दूंगी ।"

:बेटी पर विश्वास करने से: इसीलिए बेटी के माता-पिता को: चैन मिल गया और उन्हें: नींद आ गयी ।

सूर्यास्त के बाद रात्रि में भवानी ने खाट उठाली ।

:उन लोगों को: सोते हुए पलंग के साथ भवानी उठाकर ले गयी ।

रात :भर: में भवानी ने माना जी के देश :राज्य: में धावा बोला डाल दिया ।

माना जी के घर के कंगूरा खिर रहे हैं ।

तब माना जी को बड़ी चिन्ता हुई-

"क्या शत्रु ने आक्रमण कर दिया है,:या: क्या पशुओं ने उत्पात किया है ?

मेरी कांफ का कंगूरा कैसे खिर रहा है ?

तब माना जी की पत्नी धर्म द्वार पर उन्हें समझाती है-

"विपत्ति-ग्रस्त :एक: बेटी तुम्हारे देश में आ रही है ।

तुम में आर :उसे शरण देने की: सामर्थ्य हो तो रहने दीजिये :ठहरने दीजिये: नहीं तो गोल-पटोल बनाय दे दीजिये ।

:साधारण लड़की: के भ्रम में बेटी के न रखिये। वह:तो: भवानी देवी है ।"

माना जी ने तत्काल पांवों से पनही उतार दी ।

"मेरे माई,:ओता ये गायक का अवलम्ब (६) एकलादी की महत्ता दिखाने के लिए:"

:माना जी ने अपने: सिर से पगड़ी पाग :भी: उतार ली,

और माना जी ने गले में अंगोछा डाल लिया।

:वह: आरती जलाकर,

दांतों में तिनका दाब कर :आधीनता स्वीकार: माना जी चल दिये ।

बेटी ने बारम्बार :अनेकों बार अनुरोध-आग्रह करके: डांग में धोरी :गाय: को रुकवा लिया,

:और कहा: -" भवानी, :मैं तुम्हारे लिए: हरे बांस कटवा कर खोड़े डांग के बीच में मैं रुकवा दूंगा ।

:तुम्हारे घर के पास: धर्म द्वार पर भवानी :मैं: मन्दिर बनवा दूंगा ।

माना जी की डांग में :मेरे यहां: भवानी :आपकी: जो भी इच्छा हो :आप: कर सकती हैं :सब कुछ करने को पूर्ण स्वतंत्र हैं: ।"

:माना जी एकलादी के: कुटुंब-परिवार को भद्दा-सत्कार दे रहे हैं ।

:अनुरोध को स्वीकार कर के: गायों को बेटी ने उसी डांग में रोक लिया ।
:मामा जी ने उनकी: मदद की और घोड़े रखवा दिये ।
:उनके लिए: डांग बना दी गयी, गाय को बगार :गाय बांधने की जगह: में :वे: ले गये ।
बेटी ने समझ कर शिव जी का मंदिर बनवा लिया ।
उसमें :मंदिर में: वह :रखवाली: नित्य-दिन शंभु-भोला को जल चढ़ाती है ।
मन में भवानी :रखवाली: भाई का वरदान मांगती है :चाहती है: ।
यत्नपूर्वक बारह वर्ष तक भवानी ने शिव पर जल चढ़ाया :पूजा की: ।
:तपस्या से प्रसन्न: शिव जी की ज्योति जब धर्म द्वार पर बोल रही है-
"बेटी, किसलिये :तुमने: यत्नपूर्वक बारम्बार :मेरी: सेवा की है ?
नित्य-दिन की :सेवा का: भवानी वरदान ले लो ।"
नतमस्तक होकर बेटी निवेदन करती है -
"अब मुझे भी एक वीर भाई दे दीजिये,
जिससे :वे: राजा गरूरठवा से बदला लें ।
:वे: उस :की: गढ़ी को :नष्ट-भ्रष्ट कर के धूल में मिलाने के बाद:
जोतकर धान बुवा दें : जमीन को ऊसर कर दें: ।"
शंभु जी बेटी को समझा रहे हैं-
"तुम्हारी मां बूढ़ी हो गयी है और पिता के बाल बहुत सफेद हो गये हैं :वे बहुत-बूढ़े हैं: ।
भवानी :अब तक: तेरा गंवार मन नहीं गया है ।
मैं किस तरह से दो बलवीर भाई दे दूं ?"
बेटी मंदिर के द्वार पर प्रार्थना कर रही है -
" भोला, इसी कार्य : के प्रयोजन: वश मैंने तप किया है ।"
"बेटी :तु: स्नान :के लिए: गंगा के घाट पर जाना ।
वहां उल्टी धारा में फूल बहता आयेगा ।
बेटी :उसके लिये तुम: झोली फैला देना ।
झोली में तेरी :वह: फूल आ जायेगा ।
:घर की: देहरी लांघते समय :तुम्हारी: झोली में दो भाई हो जायेंगे ।

अपनी मां को :जाकर: और :प्रसूतिगृह: में लिटा देना।
सूर्योदय के समय :आकाश: सिन्दूरी सा हुआ।
बेटी संगम घाट के रास्ते पर चल दी।
उसके साथ में बहुत सी संगी-साथिन :भी: साथ :गयीं:।
भवानी ने जाकर संगम घाट में स्नान किया।
उल्टी धारा में कुछ बह रहा है।
संगम पर कुछ भक्तिन जी की गोद में आ गया।
रुक्मावती सभी द्वार :घर के लिए: के रास्ते पर चलती है।
श्रेष्ठ बेटे :घर की: देहरी लांघते पैदा हो गये।
:रुक्मावती कहती है मां से: -"मेरी मां, तुम सौर में लेट रहो।"
अपनी माता भक्तिन जी को समझाती है -
"ऐसी विपत्ति तो मैंने :किसी तरह से: ममता जी की डांग में जाकर काटी है।
यह दूसरी :विपत्ति उत्पन्न कर रही हो:।
:लगता है: तू माता जी की डांग भी छुड़वा देगी।"
तब भवानी अब अपनी मां को समझाती है-
"इन बच्चों को तुम्हें: नारी-कांक में पालना-पोसना नहीं है।
:क्योंकि: इस बार शिव जी ने भारी वाड़ वरदान :मुझे: दिया है।"
बहन ने अपनी मां को अन्धेरे सौर :गृह: में लिटा दिया है।
सभी द्वारों :घरों: में :रुक्मावती: बता की डालियां बंटवा रही है। -
"मेरी मां के दो भाई :उत्पन्न हुए: हैं।"
दुनियां :लोग-बाग: :उनके: सभी द्वार :घर पर: चकित :चकित: हो रहे हैं।-
"मां तो इनकी बहुत बूढ़ी है और पिता के सब-कुछ :जैसे: बाल :सफेद हो गये: हैं।
इन :वृद्ध: बूढ़ों के :इस उम्र में: दो पुत्र :पैदा होना: :वास्तव में: विचित्र है।
क्या करुणानिधि अपनी लीला :कार्य रचना विधान: भूल गये हैं?
:या संभव है: किसी विमाता ने :द्वेष वश: इन्हें :घर से: निकाल फेंका हो?
क्या शम्भु ने वरदान दे दिया है?

:अन्यथा: इन झूलों के गोद में बालक किस तरह खेल सकते हैं ?"

:रुक्मावती शंका-समाधान करती है: -"मेरे भाई अवतारी हैं,

बारंबार :इसी बात पर वह बल देती है : ।"

कुछ ही दिनों में मेरे भाईयों :के जन्म आदि: का रहस्य :तुम लोग: जान जाओगे
: इनके असाधारण कार्य-कलापों से: ।"

"इसीलिए बेटी :रुक्मावती: माता जी की डांग में बसी है :तप द्वारा भाईयों की
प्राप्ति के लिए: ।"

विपत्तिग्रस्त होने के कारण उसे अपना :पुराना: गांव धनी द्वार :घर: छोड़ना पड़ा
था ।

:उसने: बारह वर्ष तक शिव जी के मंदिर में जल से जल चढ़ाया है ।"

फांफ में यह आश्चर्य की बात कहती है ।

भवानी ने भाईयों को बिना ब्याई :बच्चा दिये बिना ही: गायों का दूध पिलाया ।

:भाई: नित्यदिन दूने और रातों में चार गुने बढ़ते हैं : असाधारण रूप से उनकी
वृद्धि होती है : ।

छै मास की ही आयु में :वे: अब टिटकारी :पशु को बुलाने,प्यार करने आदि की
आवाज़: दे रहे हैं ।

वह धनी द्वार :घर में: पर चोरी का टटवा कम कर रहे हैं ।

घर के बाहर :गाय बांधने का बाड़ा: से वे गाय बाहर निकालते हैं ।

:चराने के लिए: गायें माता जी की डांग में :उन्होंने: छोड़ दीं ।

इतराये हुए :घमंडी: ग्वालों का घमंड दूर किया :राजकीय ग्वाला:
होने से वे घमंड में थे,उन्हें मार पीट कर भगा दिया क्योंकि उन्होंने मना करिक
किया-"यहां मत चराओ पशुओं की यह स्थान राजा के लिए सुरक्षित है ।"

:पशुओं को घर ले जाने का समय होने पर भी: भाई ने गायों को -
बैलों को चारा-पानी :के लिए: नहीं लौटाया ।

रुक्मावती को पता लग गया था कन्हैया :भाई: डांग में :पशुओं: को ले गया है ।

बांस का टोटा :टुकड़ा: बहिन जी ने गठ्ठी में रखा ।

माता जी की डांग की ओर भवानी जा रही है ।

धनी मझोय :एक झाड़ का नाम: का झाड़ जिस पर अमर बेल छायी है ।

ढोर वाले :पशु पालक भाई: सुख निद्रा में सो रहे हैं।
बेटी ने वाले की ढोर वाले :भाई: की उष्णीष :पगड़ी: को खींच दिया।
कुंवर की नींद जब मांझिसार में खुली -
"बहिन जी अपने घर लौट जाइये।
कन्हैया :मैं: यह झाड़ी-ढांग अब नहीं छोड़ूंगा।
नहीं तो अब मेघल की दुकान में जाइये।
उससे बछेड़ा :घोड़ा: मर्वा :बनवा: लीजिये।
जिस पर :घोड़े पर: चढ़ कर भवानी :मैं: झांझ नगरी में जाऊंगा।"
बहिन जी द्रापदी :भाई: को ऐसे समझाये -
"मेघल बहुत अधिक हाथों का कोढ़ी, पांवों से पंगु और आंखों से अन्धा है।
उसने बारह वर्ष से मेरे भाई मटसाल :मिट्टी के बर्तन बनाने का स्थान: को नहीं
देखा है।"
:ऐसा मेघल:"किस तरह मेरे राम :मन को प्रमुदित करने: के लिए ठीक से बच्चे को
:चक्र: भाये।
जिस पर चढ़ कर भाई :तुम: नगरी झांझ को जाये।
मेरे भाई व्यर्थ ही ऐसे खटका खटका रहे हो : परेशान कर रहे हो:।
आज बेटी :मैं: दुर्गति:, व्यक्त, दुःखित होकर नगरी में जायेगी।
:फिर वह फुसलाती है: मेरे भाई उड़ीस मरू का अच्छा बाजार लगने दो।
जब :उस समय: अच्छे मूल्य का :महंगा: बछेड़ा :मैं: खरीद दूंगी।
मेरे भाई :तुम घोड़े की तेज चाल के (१०) कारण: पवन में फहराने लगोगे।
:अगर इससे भी असंतुष्ट हो तो: हरियाना देश का बछेड़ा ले दूंगी।"
:लेकिन: वह नगरी-द्वार पर मचल गये -
"भवानी, तुम मेरे कुंज के द्वार पर जाओ।
:वहां: अनब्याही बछोरों :गायों: का दूध निकाल लो :दुह लेना:।
:उस दूध से: रच-रच कर :अच्छी तरह से: मेघल को स्नान कराना।
:उस: दूध से नहाने से :मेघल: सौ वर्ष के हो जायेंगे।
जिससे स्वस्थ होकर पक्की पीढ़ :चक्र: का बछेड़ा माढेंगे।"
भोली बहिन द्रापदी :कृष्ण: को समझाती है -

"मेरे लाड़ले, कल्याई गाय में दूध बार-बार नहीं निकलता है ।
मुझ से माई :व्यर्थ में ही: भारी डाड़ :जुर्माना: ले रहे हो ।"
द्वापरी :माई: भवानी को समझाते हैं -
"भवानी, तुम मेरे कुड़न के द्वार पर जाओ ।
:वहाँ: सब ब्याई बछेरें :गायें: :रही: मिलेंगी :जैसे थे: लबालब :दूध से: भारी गायें हों ।
भवानी कुड़न के द्वार पर :उनका: दूध दुह लेना ।
मेरी :शक्ति: एक नींभ का फाँका :टहनी: पहले तोड़ लेना ।
:बाद में: मेघल के स्नान :घर पर: जाना ।
उससे :दूध से: फिर रच-रच के :मेघल को: स्नान कराना ।
यही मेघल मामा पहली पीड़ का बोझा :मेरे सिर: मायेंगे ।
अब भवानी उसी समय उस ढांग में चली जाती है ।
वैसे ही भवानी कुड़न के द्वार पर पहुँची,
:वहाँ: सब ब्याई बछेरें :दूध[५१] से: लबालब भरी थीं ।
भवानी ने एक गाय को लगाया :देखा और: सोलह शृंगार कुड़न के द्वार पर किया।
उस ढांग के बीच में :माई का यह चमत्कार से: भवानी को अब विश्वास हो गया-
"सचमुच :ये: गढ़खड्वा से बदला ले लेंगी ।
मुझे इसी ढांग में :उनके सामर्थ्य का : परिचय मिल गया है ।"
:वह: दूध की खेप मेघल के द्वार पर ले गयी ।
मेघल अपने भवन के मध्य में सो रहे हैं ।
मेघल सोये हुए हैं निबुलिया :पत्नी: घर में :उन पर: पंखा कर रही है ।
"मामा को भवानी ने भरपूर :जोर की: आवाजें दीं ।
भवन के मध्य से निबुलिया उत्तर देती है -
"मेरे पति सुख की नींद सो रहे हैं ।
मेघल के बीच में :शरीर में: मैं पंखा कर रही हूं ।
फिर :पति के जागने पर: मैं तेरी पुकार सुनूंगी ।"
निबुलिया तो पतिव्रता है :जो अपने: धर्म को यत्न :से निभाती है: ।

:बंदी लिए हुए सोये: अपने पति को जगाती नहीं थी ।
:लेकिन: जब मेघल के कानों में आवाज गयी ।
उस समय :मेघल ने: निबुलिया को हुक्म फरमाया :कहा: -
"निबुलिया तू अपने द्वार :दरवाजे: पर जाओ ।
:और देखो: मेरे दरवाजे कौन 'मामा' कह कर पुकार रहा है ।
किस देश :स्थान: की भान्जी मेरे अपने द्वार :घर: में आयी है ?
उसका आना विचित्र सा है क्योंकि हम को तो पहले से ही नठिया माना जाता है।
निबुलिया दरवाजे पर :देखने: जाती है ।
दरवाजे पर जब :वह: भवानी की शक्ल देखती है -
"मेरे पास :विनिमय के लिए: पीतल के बरतन नहीं हैं, गांठ में पर्याप्त पैसे नहीं हैं ।
यह दूध, दही भवानी हमें नहीं लेना है ।
तुम किसी और के दरवाजे (१२) :जाकर: भवानी :अपना दूध-दही: बेच लो ।"
भवानी निबुलिया को समझाती है -
"दरवाजे पर मामा को बुला दीजिये ।
:वह: मेरे सभी काम को संवारेंगे :बनायेंगे: ।
:उन्हें: तुम दरवाजे पर लिवा लाओ ।"
निबुलिया द्वार पर भवानी को उत्तर देती है -
"बेटी, सोये स्वामी को मैं नहीं जगाऊंगी,
:और: न पलंग से :ही: उतार कर लाऊंगी ।
भवानी, तुम मेरे घर के बीच से चली जाओ ।
उस सीढ़ी :के ऊपर: तुम्हारे मामा लेटे :हुये: हैं ।
वहीं जाकर मामा को जगा लेना ।
भवानी मकान के बीच में :से: गयीं ।
मेघल पर दूध का छिलका :छींटा: भवानी ने किया ।
दूध की छींटा लगते ही मेघल सौ वर्ष के हो गये ।
आंखों से :यह चमत्कार: देखते ही मेघल ने :श्रद्धा से: भवानी के पैर पकड़ लिया ।-

'मां मेरे लिए तुम दूसरे भगवान :की तरह: हो गयी हो ।
मेरी माता मैं तुम्हारा क्या काम करूं ?'
मेघल को भवानी :अपना प्रयोजन: समझाती है -
'मेरे मामा, तुम कुम्हार गढ़ी के पार जाओ ।
:वहां तुम: एक हाथ :मात्र पहले फावड़े की चोट पर: मिट्टी खोद लेना ।
:उस मिट्टी को: मामा सिबुलिया के शीश पर धर देना ।
जिससे :उस: मिट्टी को :लाकर: मटसाल में डाले ।'
:मेघल ने रुक्खादी के कथनानुसार किया:
उस मिट्टी को सिबुलिया हाथ से रौंध रही है ।
मेघल चक्के को घर के उस दरवाजे पर घुमा रहे हैं ।
सिबुलिया ने कोड़ा की पीढ़ :एक प्रकार का शिरोभूषण: हाथ से बना दिया ।
दरवाजे पर मेघल कोड़ा बना रहे हैं ।
:लेकिन अभ्यास छूटने से: पहली पीढ़ के कोड़ा टेढ़े-मेढ़े बन गये ।
:इसीलिए: मेघल ने दूसरी पीढ़ का कोड़ा बना दिया ।
(१३)
छेड़ सौ :और: कोड़ा :मेघल: ने :सुन्दर: देखने योग्य मां :बना: दिये और
:बाद में: छेड़ हजार भी ।
दसियों :अनेक: कोड़ा मेघल ने मांजकर थाल में जमा लिया ।
अपनी धर्म व्यवहारी बहिन से मेघल मदावत :कैसे: हो गये ।
मेघल मार और चक्र दोनों की मिट्टी :से: मल कर धो रहे हैं ।
:मेघल कोड़ा लेकर जाते हुए: तीसरे वन :में: बेटी के आड़ द्वार पर पहुंच गये ।
मेघल की पत्नी ने :अन्य: थोड़े नगर द्वार पर :जाकर: लाये ।
यह सुरमा :भाई: बेटी और मेघल से कहते हैं -
'यह दूसरी मांवर का कोड़ा :बहिन तुम: क्यों ले आई हो ?
मेघल :इस: कोड़ा को राजा के निवास :पास: में ले जाओ ।
राजा से :इसके बदले में तुम्हें: मेवा भारी इनाम मिलेगा ।
:मैं: दूसरी मांवर के कोड़ा से उधारी नहीं करूंगा ।
:ऐसा करने से: मेरे क्षत्रियत्व का मान घट जायेगा ।

पहली भांवर का बछेड़ा :मेघल: लेते आइये ।
राजा घेटी :रहलादी: को मेघल समझाते हैं -
"अरे कन्हैया, पहली भांवर के बछेड़ा टेढ़ा हो गया है,
इसीलिए दूसरी भांवर का बछेड़ा मैं घर में :तुम्हारे: ले आया हूं ।
इसीलिए कन्हैया ने उस घोड़े को फेंक दिया ।
मेघल दूसरी भांवर का बछेड़ा अपने घर ले गये ।
"मेरे मेघल :भाई ने: कहा, पहली भांवर का बछेड़ा लेते आइये ।"
पहली भांवर का बछेड़ा उस सूरमा ने घुड़साल में बांधा ।
कन्हैया ने उस घोड़े के आगाड़ी पिछाड़ी लगायी ।
वह कंठ और मुख में :घोड़े के: लोहे का छल्ला लगा रहे हैं ।
राजा घेटी :रहलादी: उन्हा :भाई: से दुबारा कहती है -
"मेरे भाई, मिट्टी का बछेड़ा बूंद :पानी: पड़ने से गल जाता है ।
इस बार उत्तरायण में पुना मार्ग का मेला लगने दो,
जिससे तुम्हें बड़ी कीमत का :घोड़ा: देख भाल कर खरीद दूंगी ।
राजा घेटी को वह कन्हैया :उस बछेड़ा का प्रयोजन: समझाते हैं -
"अरी बहिन, :मैं: कम मोल :खरीदे: के घोड़ों की सवारी नहीं कर सकता :क्योंकि-
ऐसा करने से: मेरे गुरुओं का सम्मान समाप्त हो जायेगा ।
(१४)
यही बछेड़ा सीधे से :अच्छी तरह से: जायेगा :काम देगा: ।"
"राजा घेटी" :गायक से भूल हो गयी यहां भाई को होना चाहिये था अतः दुबारा
रूप होगा-: भाई ने ब्रह्मा का ध्यान किया, गुरुजनों का पवित्र, महान नाम लिया ।
आधी रात को आंवला :वृक्ष का नाम: के :नीचे: उस सूरमा ने ब्रह्मा को स्मरण
करके :उससे: सम्बन्ध स्थापित किया ।
वह सूरमा घोड़े के सभी अंगों में अक्षर :मंत्र: पढ़ कर मार रहा है ।
:उसके: पहले अक्षर के मारते :ही: घोड़ा फुरहरी :कंपकंपी : जीवित होने का भाव।
लेता दिखा ।
"भोला जी के नाम" नाम का दूसरा अक्षर बड़े ध्यान से :उसने: मारा ।
:और: घोड़े को : प्राणवान होने पर: घुड़साल के बीच खींचने लगे ।

इसीलिये :घोड़े के जीवित होने पर: सुरमा ने :उसके सामने: हरी घास डाली ।
तब घोड़ा हरी घास खाने लगा ।
:दूसरे दिन भाई युद्ध में जाने के लिए बहिन से आज्ञा चाहते हैं:
"बहिन, मैं :जो: कह रहा हूं :उसे: सुनो -
सुरमा को :मुझे: वैरी देश में जाकर युद्ध करना है ।"
राजा बेटी भाई से :जाने के विषय के सम्बन्ध में: जानने :केलिए: पूछती है -
"क्यों कन्हैया, क्या कुटुंब :घर के लोगों में से किसी की: कोई बात तुम्हें लग गयी है :बुरी लग गयी है: ?
किसलिए तुमने घोड़े को सजा कर :जाने के लिए: तैयारी की है ?
इसका विवरण :इस बारे में: :मुझे: सुना दो ।"
कन्हैया इसके वचन :इतना कहना: उस बहिन का सुनते हैं -
" :मुझे: न तो ज्ञान :विद्याध्ययन की बात: लगी है, :और: न कुटुंब की :ही: कोई कड़ी बात :बुरी: लगी है ।
बांगर से जाकर भवानी मुझे संबंध करना है :मिलना है: ।
:जिससे कि अपने: माता-पिता, बहिन के :अपमान का: बदला चुका सकूं ।
मामा जी के देश में तुम्हारे :प्रयोजन के लिए: घोड़ा सज रहा :तैयार हो रहा:है।"
राजा बेटी भाई से दुबारा कहती है -
" तुम्हारी आयु सिर्फ आठ वर्ष की है, होंठ से दूध की लार टपकती है,
लड़ाई के दांव कन्हैया तुमने नहीं देखे हैं ।
लाड़वे, बांगर के घर में बहुत से जाट हैं ।
वे तुझे धनुष-बाण से मार कर तेरा घोड़ा छिना लें ।
इसीलिए लाड़वे घर के दरवाजे पर रोकने (७५) :के लिए कहने: से मान जाओ : जाने का आग्रह मत करो: ।"
कन्हैया राजा बेटी से कहते हैं -
पृथ्वी :लोक के: संसार में :हमें: भवानी बारंबार नहीं आना जाना है,
:दुबारा हमें जन्म आदि नहीं लेना है: ।
भवानी बारंबार :दुबारा हमें: मनुष्य का अवतार धारण नहीं करना है ।

भवानी भीखा बारंबार : दुबारा किसी को इस तरह का: काड़ वरदान नहीं देंगे।
केवल भी बार-बार पहली भांवर का बोड़ा नहीं मांगेंगे।
बार-बार :हमें: भीखा के गढ़ एवं नाथों के स्वामी :हिमालय: की धूनी नहीं
टारना है : प्रायश्चित के लिये हिमालय में तप का पूर्व संकेत।:
इसीलिए सांगर :वैरी: की याद दिन और रात :मन में: रहती है।
सांगर के कारण ही :बदले की भावनावश: भवानी हमें सुख की नींद नहीं आती है।
इसीलिए जाकर मैं माता-पिता के अपमान का बदला लूंगा।"
यह कन्हैया राजा बेटी को समझा रहे हैं-
"अपने हाथ से :कुमारी: भवानी आरती उतारिये।
मुंह भर के वचनों से :हमें: बहिन आशीष दे दो,
जिससे सांगर से : बदले का प्रयोजन: राजा बेटी :मेरा: पूरा हो जाये।"
राजा बेटी ने ब्रह्म का स्मरण किया और गुरु का नाम लिया।
राजा बेटी भाई से कहती है-
"जैसे गंगा-जमुना में पानी बढ़े :वैसे ही मेरे: भाई के तलवार की धार बढ़े।
मेरा स्नेही :भाई: सांगर को पकड़ें टेढ़े :मात्र: करते ही मार दे।
और कन्हैया मार्ग में :बच्छी गाय: चोरी की खोजना :देखना:।
उस नमूने :बच्छी गाय: को काशी -कांक :में किसी को ? : को भेंट करदेना।"
(१८)
जब बहिन का कहना यह कन्हैया इतना सुन लेते हैं,
:तब: उस कन्हैया के दोनों पांव :घोड़े से: लटक पड़े।
सुरमा ने घोड़ा को लखुंरी चाल से बढ़ा दिया।
एक वन को सुरमा :और: दूसरा :वन: पार कर गये।
तीसरे वन में :वह: जाकर शत्रु देश में पहुंचे।
पांचों की मांकिपार में पांच भट्टियां जोतीं जाती हैं।
:भट्टी की ज्वाला से : उस सुरमा को :नेत्रों में: चका चौंध लग-लग जाता है।
:मार्ग कहता है: -" क्या :यह: सोने की लंका है, :अथवा: क्या वन में आग लग
गयी है ?
और भीखा :नौकर का नाम: :क्या: दूसरा सूर्य उगा है ?

"आज :मुझे: वैरी देश में किसलिये :नेत्रों में: चकाचौंध लग रहा है ?
:सीता कहता है:- :यह: न :तो: सोने की लंका है, न वन में आग लगी है,
और न कन्हैया दूसरे सूर्य :ही: उगे :उदित हुए: हैं।
:ये: राजा द्वारा बनाई पांच कलारिनें हैं।
उन्हीं पांचों की पांच भट्टियां रात और दिन धुंक:जल: रही हैं।
उन्हीं की ज्योति :यह: आभा हो रही है।"
ये पांचों की भट्टियां दिन और रात धुंकती हैं।
नाथ जी :सुरपाल: तथा कहने से :वे: सुन्दर घाट से पीछे :भट्टी के लिए:
चल दिये।
"मुझे भट्टी के द्वार पर भट्टी का फौंका क्यों लग रहा है ?"
कलारिन :उन्हें: उस समय :पास: बुलाकर पूछती है -
" अरे घोड़ा वाले तुम कौन देश से आ रहे हो ?
कौन देश के जाने के लिए :तुमने घोड़ा: सजा कर तैयारी की है ?"
:सुरपाल-भाई कलारिन को उल्टा-सीधा जवाब देकर, मदिरा मुफ्त में मांगते
हैं अतः कलारिन बहाना बनाती है :-
"दुकान में मुझे प्याला नहीं दीख रहा है।"
(१८)
:सुरपाल पुनः आग्रह करते हैं :
कलारिन ने नाथ :लज्जारूपी रस्सी: :एक ओर: रख दी है : वे शर्मीं थे:
और कटु बातें कहती हैं।
मोहन जी :पीने की: धुन है जिस पर :ऐसे वैसा तर्क व्यवहार कलारिन का है:।
कलारिन कहती है - ":मुझे: अपनी दुकान में अन्धेरा दीख रहा है।
कौन देश से तुम्हारा आना हुआ है और :कौन से: देश को जाना है,
:जहां कार्य है वहां जाओ, क्यों व्यर्थ में यहां समय नष्ट करते हो:।
:सुरपाल चिढ़कर कलारिन को भला-बुरा कहते हैं:
:कलारिन भी ऐंठ कर कहती है:- "मुझे बाजार में :यह: मेरी हाट राजा की ब
बनाई है : ऐरे-गैरे द्वारा नहीं :।
तुम्हारे जैसे पीने वाले घोड़े वाले मेरे यहां नित्य आते नित्य जाते हैं।"

:बहुत अधिक मात्रा में बिक्री होने से : - अरे कन्हैया, मेरी दुकान में मदिरा नहीं मिलती है।

:फिर मेरे लिए तो: अरे :क्या: कहा जाये :क्या कहूं: तू :तो: गुजर का लड़का है :जो: मदिरा का स्वाद क्या जानता है ?

तू :तो: खट्टी छाछ का पीने वाला है।"

:कलारिन के: इतने वचन जब कन्हैया सुन लेते हैं।

तब कन्हैया की :क्रोध: से: आंख लाल पड़ गयी है, मुंह के बाल फड़कने लगे -

"अरी कलारिन, धीरे :धीमे:-धीरे जबान बोलो।"

ऊधो ने ध्रुव का ध्यान किया :और: गुरु में पूरा ध्यान :केन्द्रित: किया।

:वह: उस समय एक कला में कलारिन से बातें करते हैं।

दूसरी कला में :वह: कलारिन की भट्ठीशाला में घुस गये।

तब :सुरमा: ने बारह भट्ठी की मदिरा का स्वाद लिया।

दूसरी कला में :ही: तेरहवें :मदिरा पात्र: को लुढ़का दिया।

:सभी मदिरा: मेंडेरी :बर्तनों: को वह कन्हैया सूखी :खाली: कर गया।

:इसके बाद उसने कहा:-" अरे कलारिन तुम अपनी दुकान की देखभाल करो।

कलारिन, मैं बैरी की राजधानी में जा रहा हूँ।"

सुरमा ने घोड़ा को खूंटी बाल से खड़ा किया।

कलारिन पलट कर अपनी दुकान में गयी।

इसके :देखने पर: खाली बर्तनों पर :उसकी: नजर पड़ती है।

भाई वह :श्रोता से गायक का कथन:, कलारिन अपना सिर :जमीन: मिट्टी में पटकने लगी।

:कलारिन कहती है -" मैं नहीं जानती :वह: छलपती दूसरे भगवान :रूप में यहां: आ गया था।"

(१८)

कलारिन :सुरपाल के पीछे: भागती जाती है, वह लम्बी-चौड़ी गली में रोती जाती है -

"लीला धारी लीला :काला घोड़ा या घोड़ा: को राय गह कर :पकड़ कर: थाम्भिये :रोकिये:।

मैं :दया की: आशा में लीला वाले तुम्हारे पास मांगती आ रही हूं ।"

:गायक की ओर से: वह घड़ियां धन्य हैं :और: उस घड़ी का प्रभात : भी - धन्य है: ।

उन्हीं घड़ियों में वह ग्वालिन थोड़े :वाले: का बखान करती है -

" लीला वाले लीला को हाथ पकड़ कर रोकिये ।

मेरे महाराज :तुम्हारा महत्व: मैं नहीं जानती थी ।

:साधारण: मनुष्य समझकर तुम्हें घुमा-फिरा कर अपनी दुकान में :मैंने: बातें कीं ।

मैं नहीं जानती :आप: वर्णी : भेष बदले हुए: बड़े महाराज हैं ।

मैं अभागिन :दया की आशा में: तुम्हारे पास मांगती आयी हूं ।

इसीलिए : दया करने के लिए, अपराध को क्षमा करने के लिये :

लीला को :आप: रोक दीजिये :बिना क्षमा दिये, किये बिना:

लीलावाले आप जा नहीं सकते : मैं जाने नहीं दूंगी: ।"

उस ब्रह्मा को ग्वालिन पर दया आ गयी ।

इसीलिए हाथ गह कर :पकड़ कर: लीला को रोका ।

ग्वालिन ने लीला के हाथ की हाथ को पकड़ लिया :रोकने के लिए: ।

ग्वालिन :उनके: चरण पकड़ती है और ध्यान :मन: से विनती करती है ।

ग्वालिन कहती है -" लीलावाले, मेरी भूल-चूक को माफ कर दीजिये ।"

: कृपाल व्यंग करते हैं:" ग्वालिन तुम अपने महल :घर: को लौट जाओ ।

हम तो गूजर के लड़के हैं,

:तो: मदिरा के स्वाद को क्या जाने ?

हम तो ग्वालिन खट्टी छाछ के पीने वाले हैं ।"

जब ऊधा के इतने वचनों :इतना कहना: को ग्वालिन सुनती है -

"अरे, ओ लीलावाले मेरी गलती पर ध्यान मत करना ।

:साधारण: मनुष्य समझकर :भ्रम में: तुमको :मैंने: अपनी दुकान पर :मदिरा- पीने से : रोका था ।

(१६)

अरे मेरे ऊधा, मेरा तो जन्म-जन्म का :हमेशा का: रोजगार : तुम्हारे रुष्ट - होने से: टूट गया है ।

"अरे ऊधा जी तुम्हारी :दी दी गयी: रोटी :कृपा: तो मेरा पेट :भरती :
है :भरण -पोषण करती है ।"
ऊधा जी को ग्वालिन पर दया आ गयी थी ।
:उन्होंने मटुक उठाकर ग्वालिन को दी :और: कहा -
"ग्वालिन :तुम: लौट कर अपनी दुकान :को: जाओ ।
:यह: स्थान तुम्हें फूल :पहली बार सींची हुई शराब: से पुनः भर जायेगा ।"
तब ग्वालिन लौट कर अपने रंगमहल को जाती है ।
:ब्रह्मा ने : सीता को बेरी देश में बढ़ा दिया ।
:वे: सीता की खूंटी बाल से बढ़ाते हैं ।
कन्हैया एक वन को और दूसरा पार कर गये ।
तीसरे वन में ब्रह्मा मांझिवार पहुंचे ।
कन्हैया ने मांझिवार में डेरा डाल दिया ।
:उन्होंने: उन घड़ियां :उस समय: में तुरत :बहुत झुकी हुई: कील को खोला ।
यह कन्हैया :मुरली को: पोंछते हैं : उस पर पड़ी धूल को साफ करते हैं:,
उसके मुंह :सिर: पर हाथ धर कर :रखकर: पुचकारते हैं : स्नेह पूर्ण आवाजें -
देते हैं : ।
:प्रलाप करते हैं:-" गौरी, मुरली मैंने तुम्हें चने हुए :लगे हुए: दूर्वांजी को
चुगाया : खिलाया: है ।
मुरली :तुम्हें: मैंने स्वादिष्ट दूध पिलाया है ।
:अब: अब: बैरी देश में नमक हरामी मत करना ।
तेरे कारण मुरली :मेरा: माथा नीचा न हो ।
:तुम: बैरी के गढ़ : जो एक जगह बैठ जाने पर वहां से जल्दी उठे नहीं: :में:
रुको ।"
ऊंचे गढ़ में मुरली चारों तरफ देख कर :स्वर: खींचने लगी :करने लगी:
:उस समय: मोती झील :की ओर चरने के लिए: गौरी चली थीं ।
तालाब के :पास के: ऊसर :के खेत: में आकाश के तोरे :तोते की एक जाति: थे।
राजा की गोदी में :पास में: जांत : आटा पीसने की चक्की : जैसे शक्तिशाली
:मनुष्यों को चकनाचूर कर देने वाले : लोग खेलते :रहते: हैं ।

(२०)

मुरली बड़ी ही :सावधानी से: चारों ओर :देखती है: ।
अब मुरली धीर की ओर:भाई के पास: उतरती जाती है ।
धीर के युगल के बीच मुरली जाकर बैठी ।
दूर बैरी का हाल मुरली निकट से सुनाती है ।-
"मेरे जोर :स्वर प्रभाव: से कृष्ण राधा की धौरी :गायों: को अपनी बना लें, :लीजिये: ।
:वे गायें: उस पार :तालाब: में यादवों के साथ हैं ।
कम उम्र के कुछ गड़रिये :गुल्ली: डंडा और डोर :लट्टू: खेल रहे हैं ।"
कृष्ण बड़े मियों : चरवाहे: के पास जाते हैं -
"अरे चरैयियों, तुम किसकी धौरी गायें चरा रहे हो ?
मेरे ग्वालबालों यह मुझे बता दो ।"
चरैती कृष्ण को बदले में उत्तर देते हैं -
"हम राधा के :राजकीय: चरैती गोप-ग्वाले हैं ।
उन्हीं की :राधा की: धौरी गायें चरा रहे हैं ।"
मुरली :कुछ: उस कृष्ण को समझाती है ।
घुमा-फिरा कर कन्हैया चरैयियों से यही सवाल करते हैं ।
:प्रत्युत्तर में चरैती कहते हैं: -"अरे हम राधा की धौरी गायें चरा रहे हैं ।"
इस समय यह कृष्ण :स्वतः: खड़े मन ही मन :में: विचार करते हैं ।
यह कन्हैया मन में विचारते हैं :सोचते हैं: ।

(२१)

उन्होंने प्रेम की मुरली को बजा दिया :मधुर स्वर में उसने गाया कि: धौरी मोहित:मुग्ध: हो गयीं ।
धौरी को मोह लिया, उस तालाब : के पार के ऊख के खेत के: तोतों को भी मोह लिया ।
चरैयियों को :उनके चीं-चपड़ करने पर: :उन्हें: दुःख देने वाली चोटों से मार लगायी ।
मांझधार में ग्वालों को मार भगाया ।

घोसी भाग कर राजा के दरबार में पहुंचे ।

:वे: हाथ जोड़ कर विनती कर रहे हैं और भारी लाचार :बड़े विवश: पड़ते :होते: हैं -

राजा, :एक: घोड़ेवाले ने हमें कष्टप्रद मार :लगायी: दी है ।

उसने प्रेम की मुरली को बजाया किया :जिससे: गायें मोहित हो गयीं ।

राजा भैया, गायें मांझधार से जा रही हैं ।

राजा, इसीलिए :हम: भागते हुए तुम्हारे दरबार में आये हैं ।

भरे दरबार में राजा की नजर बदल गयीं :क्रुद्ध हो गया:

फौज :की: जमाकर :युद्ध के लिए: राजा ने तैयारी की ।

तब :राज्य: भवन के द्वार पर तेरह वर्णों के घोड़ा सज गये ।

वे फौजें मांझधार में चली जा रही हैं ।

:फौजों के कारण: पत्थर मुड़कर कंकड़ हो गये, :और: कंकड़ मुड़ कर तीर :की तरह तीखा: हो गये, धूल : घोड़े की टापों के कारण: आग :की गर्म: हो गयी ।

:उनके चलने से इतनी अधिक: धूल आसमान :वायुमंडल: में उड़ी जिससे सूरज लुप्त :छिप गये: हो गये ।

:गायक अपनी ओर से:-इसीलिए मेरे सूरमा :दिन ही: अंधेरी रात जैसा हो गया ।

मीखा मुनी से कथा की :कारण: समझना :चाहते हैं: -

किस कारण से सूरज, मीखा मुनी, लुप्त :छिप गये: हो गये हैं ।

मीखा मुनी जो राजा के कुल के वादेदार हैं ।

:वह: मांझधार में :सूर्य छिपने का : कारण सुनाते हैं -

राजा से सब बतांदी :मीखा: उत्तर देते हैं -

अरे भैया, राजा की डेढ़ हजार फौजें चढ़ आयीं हैं ।

अरे सेना के कारण पत्थर मुड़कर कंकड़ हो गये, कंकड़ मुड़ :कर तीक्ष्ण तीव्र गये हैं, धूल आग :हो गयी है: ।

:सेना के चलने से: धूल आसमान में :इतनी: उड़ी :है: जिससे सूरज :का: लोप हो गया है।

इसी से सन्ध्या अंधेरी रात हो गयी है।"
ऊधा ने प्रभु का ध्यान किया :और: गुरु नाम लिया।
मांझधार में व्यापारी जरा फैलाते हैं।
जब पत्थर मोती को :वे: मांझधार में बरसाते हैं।
इसीलिए झोली भर-भर फौजें मोती बिनती हैं।
झोली भर मोती भर कर :फौजें: अपने घर की ओर चल देती हैं।
: दैनिक धन के लिए प्राण संकट में (१२२) डाल कर युद्ध करते हैं, जब अनायास, सहज रूप
में जीवन भर के लिए धन सुलभ हो जाये तो फिर युद्ध कौन करना चाहेगा ? :
इसीलिए वे अपने घर द्वार :घर की ओर: लौटते जा रहे हैं।
:सागर को पार कर: उस सन्ध्या ने हरियाने गांव की ओर चढ़ावा किया:चले:।
मीरा अनुनय उस सूरमा से करती है -
" ओ सूरमा, मेरी इच्छा पर ख्याल करो।
राजा अपने सेना का पड़ाव का हरियाने गांव में आराम नहीं कीजिये।
हरियाने सूरा जाट :राजा गजसिंह की: बेटी ब्याही है।
इसीलिए काशी झांक में मोचरा :सेना के साथ: आराम कीजिये।
ऊधा जी ने मीरा की बात को सुना।
वह ऊधाजी मीरा से कहते हैं -
"मीरा अनुजी, तुम हरियल टोड़ा झांझ :गांव में: में वापस चले जाओ।
मैं :ओछे ही: हरियाने :की वीरता: का नमूना देखूंगा।"
इसीलिए हरियाने गांव की ओर मोचरा बढ़ा दिया।
सूरमा एक वन चले और दूसरा पार कर गये।
तीसरे वन में सूरमा सागर पार पहुंचे।
:वहां: यादू या याद :भूतकाल या यादगारी के: के लिये :बनवाये गये: कुंए,
नौ बावड़ियाँ थीं :जिनमें,तालाब के अन्दर:घनी छिपी :हुई: रुड्जटा थी।
वहां सूरा जाट की :ब्याही: बेटी पानी भरती थी।
उस आदमी की नजर :दृष्टि: घोरी पर जाती है।

"चिन्तामग्न: खड़ी :वह: मन में विचार करती है ।
जाटनी मन में सोचती है -" ये धोरी गायों :की:
परेशानी :चिन्ता: मेरे मन में आती है :कि: ये :मेरे: पिता जी की धोरी गायें हैं ।
:यह: घोड़ा वाला किसलिए धोरी को पृष्ठ से :पीछे से: ला रहा है ।
:पिता जी जो: बारह गांव के चौधरी हैं और तेरह के सरदार हैं ।
किस कमावन्द भाई ने धोरी पूना के बाजार के लिए रवाना कर दी है ।"
जाटनी उस ओर घोड़े वाले से पूछती है -
" कौन देश से तुम्हारा आना हुआ है और कौन देश को जा रहे हो ?
:इसका: लम्बा ब्यौरा :विवरण: और घोड़े वाले :मुझे: सुनाना ।
कहां से ये धोरी-गायें खरीदी हैं ?
वह ऊधा बेटी को उत्तर देते हैं -
"मैंने पूना के बाजार से :ये: गायें धोरी खरीदी हैं ।
उसी के न्यायसंगत अनुसार मैंने काफी डाम :पैसे: दिया है ।
इसीलिये धोरी को हरियल टौड़ा फांफ में ले जा रहा हूं ।
आज का विश्राम ब्याहिन तुम्हारे नगर पार करूंगा ।"
जाटनी घोड़े वाले से फिर से जवाब करती है -
":मेरे: पूरा पति सो रहे हैं :स्थिति से अनजान हैं:, :और संभवत: न: मेरे भाई :अपनी: ससुराल चले गये हैं ।
इसीलिए चकरी सुनी :पाकर: घोड़े वाले तुमने :गायें वहां से: टार:चुरा: ली हैं ।
इसी से चौन :आदि भी: :तुमने: रात में योग : सुअवसर प्राप्त होने पर: चुरा लिये होंगे ।"
इतने वचन :उसके: ऊधा जी सुन लेते हैं ।
ऊधा जी जलहारी को बहुत बढ़-चढ़ कर उत्तर देते हैं -
"अरी जलहारी, गंगा पार झूठे बचनों की मत कहो ।
:यद्यपि मुझे अब: सौदे के मूल्य : के सम्बन्ध में सही कीमत: की याद नहीं है,

:फिर भी: मैंने झोली भर कर ढेर से पैसे :गायों की कीमत के लिए: दिये हैं।
इसीलिए मेरे पशु :मेरे: टोला के रास्ते पर जा रहे हैं।
जलहारी इसीलिए :तू: अपने रंगमहल में लौट जाओ :तुम्हारी शंका व्यर्थ है: ।"
जलहारी ऊधा से फिर कहती है -
'घोड़े वाले कहती सुनो : अक्षय तृतीया का त्योहार- वैशाख शुक्ला तृतीया: मैं
अपने माता-पिता :मायके: के :यहां: गयी थी ।
:और: पुष्य : प्रसिद्ध नक्षत्र या पूस का महीना: में मैंने अपने माता-पिता छोड़े
थे :विदाई ली थी: ।
साथ :कैसे: पीहू पुष्प समूह सहित :तुम्हारे: पीछे-पीछे जा रहा है :सभी जानवर
साथ में जा रहे हैं,
अरे पक्षिया पशुओं के छोटे बच्चे: को :ही: तुमने पिता जी के घर में छोड़ा है ।"
जलहारी से ऊधा ने कहा -'यदि तुम ऐसा समझती हो कि मैंने चोरी की है,
तो तुम अपने जानवरों को आकर पहिचान लो ।' और उसके बाद-:
(२५)
तब ऊधा ने ब्रह्मा का ध्यान किया, गुरु से सम्बन्ध स्थापित किया ।
अरे, कलाधारी, उस गंगा पार में :अपनी: कला फैलाते हैं ।
:उन्होंने: काली गाय को धवल :सफेद बना दिया: किया, धवल को लाल-गुलाल
:सा बना दिया: कर दिया ।
ऊधा जी ने हरे :गायों को: उलट-पलट कर :यहां वहांकर : टेढ़ा तिरछा
लगा दिया ।
:उन्होंने कहा:-'ओरी जलहारी, तू अपने ननिहाल दौड़ी जा :जाकर वहीं रह:,
तू :यहां: गंगा पार किस तरह आ गयी : मायके की जब इतनी चिन्ता है और
उसके भ्रम में औरों पर शंका करती है: ?
जाटनी मेरे सुन्दर :गायों के: झुण्ड के धोखे में न आओ : कि ये तुम्हारी हैं: ।"
ऊधा जी के इतने वचन :यह कहना: यह जलहारी सुनती है -
'जाटनी, तुम अपने ननिहाल जाओ ।
जलहारी, तू मेरे पीछे-ही अर आ : मैं तो वहां से आ ही रहा हूं: ।'
:जलहारी चिढ़ कर कहती है: -' ओरे घोड़े वाले, तुम्हें गंगा की भारी कसम है ।

अरे घोड़े वाले, :तू: गंगा पार : उसी पाट पर: मोहरा :अपनी सेना को : रोके रखना ।

तब तक मैं :घर में: गागर की खेप रख आऊं ।"

तब ऊधा भी उस समय घुमा-फिरा कर कहते हैं -

"कोचा :शंकर जाति- दोगला: चोरी कर के आधी रात को भागता है ।

हम तो भोलानाथ के वरदान स्वरूप हैं ।

इसीलिए :निडर होकर: इस गंगा की पार :हम: जलधारी डेरा डालते हैं ।"

जाटनी अपने रंगमहल :केलिये: जा रही है ।

"भैया" :गायक का श्रोता के प्रति संबोधन: , :वह इतना तेज आवेग आदि के कारण चल रही है: जिसके पैर पृथ्वी पर नहीं लगते हैं ।

जाटनी एक वन चली और दूसरा :वन: भी पार कर गयी ।

तीसरे वन में जाटनी रंगमहल के द्वार पर पहुंची ।

उन सभी गागरों : और पानी भरने की: रस्सी को :उसने: रखा,

गुड़वा :नमक डाल कर बनाया हुआ गीला भात: को खूंटी में टांगा ग

एड़ियों से:क्रोध के कारण आवाज करती हुई पैरों से: सीढ़ियों में जाटनी चढ़ गयी :और उसने: जोरों से कुंभकर्णी :बहुत सोने वाले पति: पर लात रख दी :लात से पीटा: ।

जाटनी के पति रंगमहल में सुख की नींद सो रहे थे ।
(२५)

दुसराल का पिछौरा :उत्तरीय: ताने हुए पति उस रंगमहल में :सो रहे थे: ।

लड़की :पत्नी: ने राजा :पति: की कच्ची नींद से जगा दिया ।

:कच्ची नींद टूटने के कारण क्रोधवश: राजा की आंख लाल हो गयी, मूंछ के बाल फड़कने लगे ।

"अरे रानी, किसलिये तू ने :मुझे: कच्ची नींद से जगाया है ।

"ओ रानी, इसका सच्चा विवरण मुझे सुनाओ ।"

अरे :वह: जाटनी बड़ी लाचार :थी: हाथ जोड़ कर विनती करती है -

"अरे स्वामी, मेरा मायका छूटता है :और: तुम्हारी बनी-ठनी ससुराल छूटती है।

"क्योंकि एक घोड़े वाले ने माता-पिता को बिल्कुल उजाड़ दिया है ।

हंसी है :मायके के सभी: धौरी :गायें: गंगापार खड़ी हैं ।

इसीलिए कुंवर :पति: :तुम्हें गंगा: पार :घाड़े वाले से: युद्ध करना है ।

वैरी देख :उस स्थान से: जाने ना पाये :सही-सलामत: ।"

पति जलहारी के इतने वचनों को सुनता है

पति जलहारी से बदल कर :चिढ़ कर: कहता है -

" अरे ऐसी ससुराल में आग लगे और तू बड़े भाड़ में :जली: जा ।

:जरा से जानवरों के लिए: हम गली में हंसी उड़वाने के लिए गंगा पार लड़ाई नहीं करेंगे ।"

पति का इतने वचन : इतना कहना: जलहारी सुनती है -

: तो वह: जलहारी पति से फिर से कहती है -

" अरे पति, तुम ने किस लिए मर्द का अवतार :धारण: किया है,

:तुम जनानी रूप में क्यों जन्मे: ।

अरे किसलिये तुमने युवावस्था पर मुग्ध हो कर :उससे: बहुत जोरों का लाव रखा

:युवावस्था वीरता का प्रतीक है: ।

व्यर्थ के लिए तुमने माता के यौवन :की: दुग्ध :पान करके: खराब किया ।

अरे मैया, मेरा मन तो घोड़े वाले के साथ मर गया है : लग गया है: ।

तो स्वामी घोड़ा वाला मेरे मन बस गया है ।

गोरे पीहरे, :उसके साथ जाकर: मैं तेरी गली-गली में भारी :बहुत: बदनामी करूंगी ।

(२८)

अरे सजभांवरे :साथ भांवरे लेकर चलने वाले पति: मैं हरियाना गांव छोड़ रही हूं,

जिससे कि मैं अपने पिता की धौरी गायों की देखभाल कर सकूं ।

अरे स्वामी मैं :मायके की: गायों की गोबर की लेप डालूंगी ।

जलहारी के इतने कठोर वचन जब स्वामी सुनता है ।

इसीलिए वह स्वामी जलहारी को समझाता है-

"गोरी जलहारी, मेरे वचनों का :बु: ख्याल मत करना ।

अरे :अब: इस झांझ में भारी मारपीट होगी :झगड़ा होगा: ।

:लेकिन: भारी असाढ़ अब मेरी रानी लग रहा है ।

असाढ़ के बाद सावन लग जायेगा ।

इसी से लम्बी-लम्बी सुबकें लेकर मेघ बरसने लगेगा :दिन-रात:
भयंक में मेरी रानी प्रलय मच जायेगा ।
मेरे बैरी की :उसकी: चोंच चीर कर नष्ट कर दूंगा ।
इसीलिए :स्थिति की भयंकरता का विचार करके: रानी भवन में रहने से मान
जाओ :बात अभी घर में ही है: ।
वीर के यत्नपूर्वक :बनाकर कहे गये: वचनों को पटरानी ने सुना ।
पटरानी दुबारा कहती है -
तुमने, अरे क्यों :मनुष्य का: अवतार धारण किया है ।
:तुम अगर: पुतला-पुतली से :होते तो: :मैं: पैसा न्योछावर कर देती ।
अरे प्रियतम भैया, मैं :तुम्हारा: सुन्दर ब्याह रचाती ।
तुम्हारा मैं कन्या दान देती ।
अरे पीहरे, मैं तुम्हें हरी चुड़ियां पहनाती ।
पीहरे, तुम्हें :मैं: तिलक करके पूजती :और: गाती ।
तुम से पीहरे :मैं: हृदय भर के भेंट करती ।
:उसके बाद विदा के लिए: तुम्हें डोली में बैठा देती ।
अरे जब पीहरा :पत्नी के: इतने वचन सुन लेता है ।
:तब वह: पीहरा रंगमहल में जुनून :उन्माद: से भर गया ।
:उसकी: आंख गुस्से से लाल पड़ गयी, मुंह के बाल फड़कने लगे ।
:उसने कहा:- ' गोरी रानी, ऐसी बातें मत करो, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये
शोभा नहीं देता है ।
घोड़ा वाला गंगा पार से जाने नहीं पायेगा ।
घोड़े वाले की सभी धारीं :मैं: छीन लूंगा ।
:उसे: मैं अभी मार कर सागर पार से भगा दूंगा ।
जब राजा ने इतने वचन कहे हैं ।
राजा ने उस समय फौजें सजाकर तैयार कीं ।
:वह: उस घड़ी :समय: मन में : कार्य के सम्बन्ध में कुछ: सोचते,
हुए मन में ही विचार करता है -

":शुरू से: कांक के महाराज :से: :घोड़ा वाला बच कर: नहीं जा पायेगा ।
कांक की ओर से भैया, :उसे: मार कर भगा दूंगा ।
इसी के साथ में डेढ़ हजार फौजें चल गयीं ।
ऊधा को भीखा सुनी : सेना आदि के सम्बन्ध का: ब्यौरा :विवरण:
सुनाते हैं । -
" ऊधा जी, मैंने तुम्हें हजार बार मना किया था ,
लेकिन तुमने एक बार भी मेरी बात नहीं मानी ।
हरियाने का राजा डेढ़ हजार फौजें ले कर :युद्ध के लिए: चढ़ आया है ।
उन सुघर ऊधा जी ने :करारी पक्षी की तरह: आवाज़ इस हरियाने गांव में की,
जब उन ऊधा जी ने भीखा का :यह: जवाब :उत्तर: सुना,
ऊधा जी उत्तर में भीखा से कहते हैं -
" अरे भीखा सुनी, मुझ से धीरे बोलो : संभल कर बातें करो: ।
अरे :मैं: देखता हूं, उस हरियाने गांव के राजा को :और: गुरु से गहरा ध्यान
लगाया ।
उन्होंने राजा को दाढ़ी वाला बकरा बना दिया ।
फौज को भेड़-बकरी बना दिया ।
:उन्होंने: भीखा सुनी को यह हुक्म दिया :और कहा:-
"भीखा सुनी :इन्हें:, वन की झाड़ी-डांग में :चराने के लिए: ले जाओ ।
भैया : तब तक:, :मैं: इस सागर पार का दृश्य देखूंगा ।"
ऊधा के इस कार्य को जाटनी आश्चर्य से देखती है ।
जाटनी गिड़गिड़ा के हाथ जोड़ कर कहती है-
"कांक के धनी महाराज :शक्तिशाली समृद्धिशाली:,
मैंने नर समझ कर :जादूगर के भ्रम में: तुम्हें सागर पार रोका ।
मैं नहीं जानती थी कि तुम नीलानाथ :की तरह: के वरदानी हो ।
घोड़े वाले, मेरी भूल पर ख्याल न करना ।
मेरी भूल-चूक :को तुम: माफ कर देना ।
मेरी फौजों को फिर से बदल कर :पुन: मनुष्य बना कर: हरियाने गांव को
बसा दीजिये ।

जब ऊधा जलहारी का यह कहना सुनते हैं ।
तब स्नेही जलहारी से कहते हैं -
"जलहारी, तू अपने रंग महल में लौट जा ।"
तब जलहारी ऊधा से दुबारा कहती है :प्रार्थना करती है: -
"ऊधा, तुम दूसरे भगवान जैसे हो +,
इसी से मेरी भूल पर ध्यान न करो ।
ऊधा जी को जलहारी पर मोह : दया: आ गया :गयी: ।
ऊधा ने भभूत उठा कर फौजों की ओर फेंकी ।
भेड़-बकरी उसी समय फौज बन गयी,
राजा ने इसीलिए स्वरूप प्राप्त करते ही ऊधा के पांव पकड़ लिये ।
राजा इसीलिए हाथ जोड़ कर विनती करता है -
"राजा, मेरी भूल पर ध्यान न करना ।
:क्योंकि: :साधारण: मनुष्य समझ कर भ्रमवश मैंने तुम्हें सागर पार रोका ।
ऊधा जी तुम तो दूसरे भगवान हो ।"
:इसके बाद: ऊधा जी ने जरूरी हुक्म :जरूरी काम: भीखा को दिया :सौंपा: ।-
"भीखा सगुनी, :पशु के: समूह को काली-झांझ की ओर बढ़ा दो ।
वह मान्धी :रखवाली की बेटी: झांझ में सूखे साग : बथुआ : बिना घी:
दूध मक्खन आदि के: :खाना: खा रही है ।
घर-घर में :अन्य लोग भी दूध-दही खा सकें: इसीलिए,
धौरी : गायें उनके यहां: बांध दो ।"
भीखा तो राजा के हुक्म के तावेदार हैं : आज्ञापालक: ।
इसी से भीखा ने मोहरा :पशुओं: को बढ़ा दिया ।
ऊधा जी एक वन चले, :और: दूसरा भी पार कर गये ।
तीसरे वन में ऊधा जी मांझदार पहुंच गये ।
:ऊधा जी: ने भीखा को जरूरी हुक्म दिया । -
"तुम काली झांझ :के लिए: में धौरी ले जाओ,

:तब तक विश्राम के लिए: भाई, हम :तो: इस झाड़ी-ढांग में डेरा डालते हैं।"
ऊधा जी :लीला से: जमीन पर उतर आये, :उन्होंने: लीला :घोड़े: को बड़े
बरख :एक वृक्ष: पेड़ से बांधा।
उन्होंने बन मुरली को ठवर :स्थान:पवित्रस्थान: में टांगा।
ऊधा ने घोड़े की झाड़ी पछाड़ी लगायी।
:और: स्वयं :आराम करने के लिए: बाग में लेट गये।
अरे वह ऊधा जी तो हे भाव से सुख की नींद :बदले की भावना वश: नहीं आये थे।
ऊधा जी ने :तकिया के लिए: बाग में पगड़ी :सिर के नीचे: रख ली।
ऊधा जी गहरी नींद सो गये।
अरे वह पृथ्वी के विषैले नाग निकले,
:और: वह ऊधा जी को कलमा में डंस गये।
:विष के कारण: भैया :कुरपाल: उस समय मुर्दे के समान हो गये।
डंसने के बाद नाग पृथ्वी लोक में समा गया।
मुरली की नजर जब ऊधा को डंसा गया :उस समय: पड़ गयी।
बन मुरली की नजर नाग पर पड़ गयी।
बन मुरली लीला से कहती है -
"लीला तुम पर चढ़ने वाले :सवार:, मुझे पालने वाले :कुरपाल: को धरती के
विषैले नाग ने डंस लिया है।
:पर मैं क्या करूं क्योंकि: इस निर्मोही :कुरपाल: ने मेरी अच्छी तरह से :पींजड़े
की: सुनत कील लगा दी है।
:और: तुम्हारी भैया ने बड़े अच्छी तरह से झाड़ी-पछाड़ी लगाई है:पैर जोरों से
बांधे हैं:।
अब किसे कहा जाये :जो: सबरीया :दूत: बन जाये।
इसके बारे में थोड़े मुझे सुनाओ :क्या करें: ?
मुरली ने लीला का ऐसा उत्तर सुना -
"मुरली, तू चोंच से सुनत कील को निकाल दो।
मेरी झाड़ी-पछाड़ी काट दो :ताकि: मैं बगिया में छूट कर निकल जाऊं।"

तब सुरही ने चोंच से अपनी सुनत कील निकाल दी ।
:उसने: सीला की झाड़ी-पहाड़ी काटी :जिससे: विष चारों पैर से सीला कोचे से छुवती है ।
अधिकारी :सुधा: से :भी: ऊंचे :अधिक ऊंचाई में: सुरही उड़ी ।
रात में :भी: सुरही भाग रही है, बीच में विश्राम तक नहीं करती है ।
सुरही ने रातों की सुख-निद्रा छोड़ दी :और: दिन का भोजन प्रसाद :बहुत ही कम: :सेवा: लिया :किया: ।
सुरही जब एक वन चली, और दूसरा :वन: पार कर गयी ।
:तो: तीसरे वन में सुरही कांझ के द्वार पर पहुंची,
कांझ के खूंटे पर बैठ कर सुरही ध्यानने सोच सोचती है ।
पश्चिन एकलादी भी की सुरही पर नजर पड़ जाती है -
ओरी सुरही, तुझे खोल लाकर :मैंने: मिर्रांची सुनवायी और पवित्र गाय का स्वादिष्ट दूध पिलवाया ।
:तब आज: सुरही तूने मेरी देश में कैसे नमक हरामी की ?
भाई :को: तुमने दुश्मन :की: और :देश में: :कैसे अकेले: छोड़ दिया ?
सुरही, सुनो, :मैं: श्राप दे दूंगी :तो: तुम्हारी :सारी: कीर्ति नष्ट हो जायेगी।
बनसुरही मोती :एकलादी: से प्रत्युत्तर में कहती है -
:भाई ने: बांगर को युद्ध में जीत कर नष्ट कर दिया, साथ ही बाट का :भी: विनाश कर दिया ।
कांझ के पेड़ समूल :उखाड़: ऊधा जी ने उखाड़ दिये ।
राजा की गाय और बछिया को नहीं छोड़ा ।
कन्हैया ने हरियाना को भी फतह करते ही :जैसे: जीत लिया ।
:पशु: अनुज को :भाई ने: बाड़ी-कांझ के सिर चढ़ा दिया था ।
झरना ने :चल कर: मांकेश्वर में डेरा डाला ।
:वहां: से मन्दिर से जागे :हुए: बन्दीले सुख की नींद सो गये थे ।
निर्मोही ने मेरी सुनत कील लगा दी थी ।

सीता की :पूर्ण आराम करने के लिए: इसीलिए :उन्होंने: झाड़ी-पहाड़ी लगा दी थी ।

आज कौन :मांझ: द्वार फांक का खबर देने वाला बनता :अर्थ वंश समाचार का:२

इसीलिए मैंने पीछे की सुनत भील को निकाला ।

सीता की इसीलिए झाड़ी-पहाड़ी को काटा ।

सीता के :इसके: आंगे में चारों :पैर: टूटे ।

बहिन जी, मैं तुम्हारे द्वार मांगती :लाचार: आयी हूं ।

मेरी के देश में तो :चलते-चलते: :मेरे: पांव :पैर: टूट गये हैं ।

भवन के द्वार पर बहिन सुरती से भाई के सम्बन्ध में कहती है -

'बोरी सुरती, भैया अभी तरह गहरी नींद में सो रहे हैं ।

:अब: कौन जगा कर उसका दुश्मन बने ?

सुरती ने जब लाड़ली बहिन का :यह: उत्तर सुना -

:तब सुरती ने कहा: -'बोरी आज भवानी उस कमलापत :रखवाली की बेटी: को

अंया :गोद में लेने का एक तरीका: गोद में :तुम: ले लो ।

बहिन तुम खंभे की ओट में खड़ी हो जाना,

:और: उस कमलापत को :भाई के: पलंग के बीच में छोड़ देना ।

उस कमलापत की किलकारी :की (३२) आवाज से: से शारद महाराज जी जग जायेंगे ।

इसी से भैया के बारे में बहिन जी तब :उन्हें: सुना देना ।'

बहिन जी ने उस कमलापत को अंया गोद ले लिया ।

और, वह बहिन खंभा की ओट में खड़ी हो गयी ।

:उन्होंने:उस कमलापत को शारद के पलंग पर छोड़ दिया ।

उस कमलापत की किलकारियों से शारद महाराज जी जाग गये ।

तब शारद महाराज की सुख-निद्रा भंग हो गयी ।

:अचानक उठ बैठने से: नींद खुलते ही पलंग के चारों पांव टूट गये ।

और उस सूरमा का :उत्तेजनावश: सलोना हाथ खांडे :की ओर: पर चला गया ।

:लेकिन किसी और की जगह शोर करती कमलापत को पलंग पर बैठा देख कर वह

बहिन पर बिगड़ गये । -

"बेटी :बहिन:, तू मर जाती, :या: तुझ पर भादों की गाज़ गिर जाती :तो अच्छा था: ।

तुमने इस भान्जी को :मेरे: पलंग में क्यों छोड़ा ?

आज :उसे मार: तलवार लग जाती तो जगत में कौन बहिन-भान्जी :के रिश्ते: को मानता :लोग-बाग कहते कि बहिन-भाई-भान्जी में आपस में प्रेम नहीं है: ।"

लाड़ली बहिन उस कारण भैया से उत्तर देती है -

"भैया आज बैरी देश में तुम्हारे पांव टूट गये हैं :आधार नष्ट हो गया है क्योंकि:- सुरपाल दादा की धरनी :पृथ्वी: के पवन नाग ने डंस लिया है ।

इसी से भैया मुझ पे कोप करते हैं ।"

भारत माता मन में सोचते-विचारते हैं ।

दादा जी मन में ही विचार करते हैं ।

वह ऊधा बन मुरली से कहते हैं-

"ओ मुरली, मुझे तुम बैरी के देश में ले चलो ।

हम :उस: धरती के बिषैले नाग को देखें :कितना शक्तिशाली है: ।"

जब मुरली ऊधा जी के बचनों को सुनती है :तब: :वह: बन मुरली उस ऊधा को उत्तर देती है -

"मैं तो पंछी हूं : इसीलिए सरलता से: बन, झाड़ी :आदि के बीच में से भी: जा सकती हूं ।

(३३)

:लेकिन: अरे, तुम, तो पहाड़ के समान भारी :वजन: के मनुष्य हो ।

तुम्हें :मैं: बैरी देश में किस बिधि से ले जाऊं ?

मुरली के यह बचन जब ऊधा ने सुने,

:तब: ऊधा जी बन मुरली को समझाते हैं -

"भाई के लिए मुरली, मैं हजारी गेंदा फूल :की तरह हल्का : बन जाता हूं ।

"भाई के लिए मुरली :मैं: धवा सा :की तरह: हल्का हो जाता :बना जाता: हूं।

"मुरली, :मैं: तेरे पंखों में समाये जाता हूं ।

मुरली, मुझे उस शत्रु देश में ले चलो ।"

भैया के :कार्य के : लिये भारत जी बड़े से छोटे बन जाते हैं, :सूक्ष्म रूप धारण कर लेते हैं: ।

वे उस समय हजारी गेंदा फूल बन गये ।
मुरली के पंखों में कन्हैया समा गये ।
मुरली :उन्हें: ऊंचे मठों के ऊपर से ले जा रही है
कचनार:वृक्ष: से भी ऊंचे मुरली उड़ती है ।
मुरली एक वन चली, :और: दूसरा :भी: :वन: पार कर गयी ।
:लेकिन: तीसरे वन में आगे तो कनफड़ों का बड़ा देश :सामने: पड़ गया ।
मकारख कहते हैं:- " अरे वनमुरली, तू :मुझे: कनफड़ों के पास क्यों लायी है ?
:मुरली उत्तर देती है: -" अरे ऊधा जी, :मेरे: सामने कनफड़ों का देश पड़ गया है ।
इसीलिए :कनफड़ों द्वारा: तुम्हारी सूनी गली पकड़ ली गयी है,
:उन्होंने तुम्हारा मार्ग अवरुद्ध कर दिया है: ।"
मुरली चिड़िया के :ये: वचन ऊधा जी सुन लेते हैं ।
ऊधा जी मुरली को समझाते हैं :कहते हैं: -
" अरे मुरली, सीधे उन कनफड़ों के देश में चलो ।"
वनमुरली सीधे कनफड़ों :के देश: की ओर चल दी ।
कनफड़ों की सारी नजरें :गृद्ध दृष्टि: मुरली पर पड़ जाती हैं ।
कनफड़े मन में सोचते हुए मन ही मन विचार करते हैं -
"मेरे भाई, अनचाहा शिकार :स्वयं: हमारे द्वार पर आ गया है ।"
वह ऊधा जी पांच वर्ष के बालक :जैसे: बन जाते हैं ।
जब कनफड़े ऊधा जी का सम्मान करने लगे ।
:तब: :दुष्टतावश सम्मान में: ऊधा को कनफड़े विष के प्याले :विषाक्त-द्रव्य: पिलाते हैं ।
कनफड़ों से वह ऊधा जी कहते हैं -
" :मुझे: विष की हंडिया, विष का डोला : बड़े सींचने का भभका: :और: विष की ही दवा लगती है ।
अरे विष की :ही: मेरी देह को भोलानाथ ने रचा है ।
:तुम्हारा विष मेरे ऊपर व्यर्थ है:

इसीलिये कनफड़े :तुम: लोग हमारे साथ में संग :संग: चलो ।
जिससे कि मैं देखूं :तुम: कैसे जादू के अवतार हो ।
मेरे भैया को पवन जैसे नाग ने डंस लिया है ।
इसी से भैया :तुम लोग मेरे: संग में साथ चलो ।"
जब कनफड़ों ने अपनी बीनें :अपने: संग में साथ में ले ली,
:तब वे: ऊधा जी के संग में साथ जाते हैं ।
वह कन्हैया एक वन चले :और: दूसरा :वन भी: पार कर गये ।
वह क्रमा तीसरे वन में मांझेदार पहुंचे ।
:वहां: वह क्रपाल बाबा सुख की नींद सोते थे ।
उस ऊधा ने :उस बाल रूप के त्याग कर: मनुष्य का शरीर बना लिया ।
ऊधा जी ने जल्दी हुक्म :उन: कनफड़ों को दिया -
"अरे कनफड़े लोगों, अपनी-अपनी बीनें बजाओ ।
:और: इस धरती में से इस विषैले नाग को निकालो ।"
तब तक :उन्होंने: :वर्षे से: छोटे युद्ध के दौरान सुन्दर खेल छोड़े ।
कनफड़े अपनी-अपनी बीनें बजा रहे हैं ।
जिससे बजाते-बजाते :उनकी: बीन के तार टूट गये ।
कोसे :लेकिन: वह धरती के विषैले नाग नहीं निकले ।
:तब क्रोधित होकर: उस ऊधा ने बेल : एक प्रकार की लता: की बड़ी तोड़ी :और:
उन कनफड़ों को कठिन मार लगायी ।
ऊधा जी ने कनफड़ों का झोली-झंडा छीन लिया ।
ऊधा जी ने कनफड़ों को मांझेदार से मार भगाया ।
उस समय कारज कन्हैया ने मन में विचार किया ।
वह ऊधा जी मन में सोचते हैं -
"अरे, अब भैया के लिये छोटा :सूक्ष्म: शरीर धारण करना होगा ।
भैया के लिये धरती पाताल में जाना होगा ।"
अरे उस कन्हैया ने बड़ा नाजुक शरीर धर :बना: लिया व
वह धरती से पाताल में धंस :घुस: गये ।

'अरे, नाग जी :वहां: सुख की नींद सोते थे ।
नाग जी को नागिन निरंतर पंखा झुला :कर: रही थी ।
कारख कन्हैया अरे उस नागिन से कहते हैं -
'ओरी नागिन, तुम अपने नाग को जगा दो ।
नाग क्यों सुख की नींद सोता है ?
तब नागिन बोल कर पूछती है -
अरे कन्हैया, तू कैसे मेरे रंगमहल में आ गया ?
मेरे नाग डंसने के बाद सुख की नींद सो गये हैं ।
तुम्हारी सूरत-मूरत जैसा तुम्हारा भाई उस द्वार में था :जिसे नाग ने डंसा:
तुम अपने भी द्वार :घर: को लौट जाओ ।'
कलाधारी ऊधा जी :नागिन का कहा: एक बार मात्र भी नहीं मानते हैं ।
वह :नागिन: कारख को सौ-सौ :अनेकों: बार समझाती है,
:लेकिन: ऊधा जी नागिन की एक बात भी नहीं मानते हैं ।
:वह कहते हैं:-' :तुम्हारे: बारम्बार मना करने पर भी मैं,
:इस समय कोई भी बात: इस भवन के द्वार पर नहीं मानूंगा ।'
:अन्त में नागिन ने कहा: -' अरे सूरमा, तुम ही मेरे नाग को जगा लो ।
मैया :वह: मेरे जगाने से नहीं जागेगा ।'
नागिन ऊधा जी से कहती है -
'अरे ऊधा जी, मेरे नाग को तुम्हीं जगा लो ।'
अरे ऊधा ने ब्रह्मा का ध्यान किया :और: गुरु नाम को उचारा ।
:तत्पश्चात: नाग की पूंछ ऊधा जी दबा देते हैं ।
ऊधा जी की ओर नाग जी :जागते ही: घर कर फुफकारते हैं ।
:नाग की विषाक्त फुफकार के : गौर :वर्ण के: कन्हैया काले पड़ जाते हैं ।
अरे वहीं से :तभी से: ऊधा जी का नाम बदल कर कारख हो गया ।
वह ऊधा जी नाग के दांतों में डाढ़ को पकड़ लेते हैं ।
ऊधा जी उस पाताल धरती में नाग से कहते हैं -
'किसलिये ऊधा जी :नाग तुमने: मेरे भैया को बांबी के पास डंसा ?

नाग जी, अरे मेरे भाई को जीवित कर दो ।
नहीं तो नाग जी :मैं तुम्हारा: :मुंह: फाड़ :चीर: कर दो कर दूंगा और दो
से :उसे: मार कर डूंगा ।"
और नागिन हाथ जोड़ कर ऊधा से विनती करती है -
"अरे ब्रह्मा, मेरी चूड़ियों का ख्याल करो :पति को मत मारो: ।
और :तुम्हारे भाई को: साधारण मनुष्य समझकर :भ्रमवश: यह नाग धरती लोक
में डंस आया है ।
नाग नहीं जानता था :तुमने:कल्याणकर :शिव: अवतार लिया है ।"
और :अब: नाग :भी: धरती पाताल में विनती करता है -
दीनदयाल :नाग से: पंचा :बड़ी बात, वचन: करवाते हैं :कराते हैं: -
":अनाथ: पीछे हुए पीछेवाली को नाग मत बोलना :काटना: ।
खाट पर विश्राम मत करना :लेटना: ।
नाग जी, :तुम घर की: देहरी मत लांघना यह :भी: ख्याल रखना ।
अरे नाग जी, हल हांकते हुए हलवाहे को न काटना ।
:ये: चार बातें नाग जी मेरी पूरी-पूरी मानिये ।
मेरे नाथ :अब: तुम धरती लोक से निकल जाओ,
:और: जाकर मेरे भाई को जिला दो :जीवित कर दो: ।"
भीतर से नाग जी धरती लोक में आ गये ।
मेरे नाग जी ऊधा से कहते हैं -
"मेरे ऊधा, दूध की नांदें भरा दो ।"
तब ऊधा ने नांदें :पात्र: भर कर दूध से भरा दीं,
:तब: नाग जी ऊधा के तलवों में जाकर लग गये ।
:नाग: दीनदयाल के तलवों से विष निकालते हैं ।
उस समय नाग जी विष निकाल कर नांदों में डालते हैं ।
तब :विष: निकलने पर कन्हैया-नन्दलाल जाग :कर: उठ :गये: ।
धरपाल दादा और बांबी के पार :सर्प के घर के बाहर: ब्यौरा :पूर्ण-
विवरण:सुनते हैं -

"मेरी सन सुरती, मैं बहुत जोरों की गहरी नींद सो गया था ।
क्या इसीलिए दिमाग :सिर: :जोरों से: जल रहा है ?
सुरती, इसका ब्यौरा :यह बात मुझे: सुना दो :समझा दो: ।"
तब सुरती उस ऊधा को उत्तर देती है -
" सूरपाल दादा तुम्हें धरती के काले नाग ने डंस लिया था ।
इसी से जलन :विष की ज्वाला: की वजह से :तुम्हारे: दिमाग में गर्मी चढ़ी है।
:इसी से: सूरमा के दिमाग में जलन हो रही है ।"
ऊधा के प्रत्युत्तर में सुरती कहती है -
सूरपाल दादा पूछते हैं -
"किस वजह से कारस कन्हैया काला पड़ गया है ?
इसका ब्यौरा :तुम: मुझे सुनाओ ।
इस समय मेरे मन में अन्देशा :आशंका: हो रही है :अनेकों तरह की बातें मन में
आ रही हैं : ।"
:कारस सूरपाल को पूरी बात बतलाते हैं और इसके बाद: -
कारस कन्हैया दादा से कहते हैं -
"दादा :भूमि: यहां से संभल कर चले चलिये ।
आज :सभी: बैरी हमारे पूरे हो गये हैं : सभी से बदला ले लिया गया है: ।
कासी-झांझ के घर-घर में चोरी इसीलिए :प्रयोजनार्थ: बंधवा दी गयी है ।"
(२८)
:सूरपाल सजग हो जाते हैं: सूरपाल दादा रणधीरी :घोड़े: को रस्सी
:चाबुक: लगाते हैं ।
मार्ग झांझ की ओर जाते हैं ।
सूरमा एक वन चले, :और: दूसरा पार कर गये ।
तीसरे वन में जब सूरमा मंझधार में पहुंचे ।
:गायक कहता है: "महाराज का :वह: समय धन्य था और :उस समय के भी:
घड़ी के भाग्य :भी धन्य हैं: ।
जिस घड़ी दोनों सूरमा मंझधार में पहुंचे ।
भीखा शकुनी से ऊधा कहते हैं -

"अरे जवांदी, तू टोड़ा फांक के लिए :हमारा: खबर देने वाला :समाचार-वाहक: बन जाओ।

अरे ऊधा :हमारी: लाड़ली बहिन से :हमारे सम्बन्ध में: कहना।

हम तो पहिले :पूर्व: से बैरी की राजधानी :शत्रु-देश: में चले गये थे।

:अतः: : बहिन :हमारी प्रतीक्षा में: बड़े चाव से झरोखे से देखती :रहती: होगी।

इसी से :तुम: हमारी बहिन के लिए खबर देने वाले बन जाओ।"

मांझदार में दोनों सूरमा खड़े हैं।

:वे: भीखा सगुनी से बात करते हैं -

"टोड़ा फांक में भीखा सगुनी जाओ।

:और: गोरी :बहिन: को फौरन बुला लाओ।"

जिससे बहिन :हम से: कुशल पूछ कर भेंट कर ले।"

भीखा सगुनी तो राजा की हुकम के ताबेदार थे।

भीखा :उनकी: इन बातों को सुन लेते हैं।

तब भीखा सीधे टाडी फांक के:लिए:चल दिये।

भीखा एक वन चले, :और: दूसरा :वन भी: पार कर गये।

तीसरे वन में :वह: बहिन के द्वार पर पहुंच गये।

उस भीखा पर बहिन की नजर जाती है :देखती है:।

लाड़ली बहिन भीखा से पूछती है -

(३८)

" अरे भीखा जवांदी, तुमने शत्रु-देश में जाकर क्यों नमक हरामी की ?

अरे भीखा, :मैंने: तुम्हारे हाथ के भरोसे भाई को मांझदार में सौंपा था।

:फिर: किस तरह कुशल छोड़े :बिना भाइयों के: अरे भीखा :तुम: हमारे द्वार पर आये हो ?

अरे भीखा, तुम पर भाखों की गाज गिरे।

भीखा तुम्हारे :जीवन के शेष: दिन नष्ट हो जायें।

क्यों, तुमने मेरे भाइयों को शत्रु देश में :अकेला: छोड़ा है ?

:भीखा: सगुनी उसका विवरण मुझे बतलाओ।"

बड़ी विवशता से :भीखा: हाथ जोड़ कर बहिन के :संमुख: विनती करता है,

:कहता है: -

उस कन्हैया ने :जैसे: पलकें फरके ही :पल भर में: सागर को जीत लिया ।
:उसने: सातनी की नींद दूर कर दी :घमंड दूर कर दिया: ।
नाग को :उसके: घर से बुला कर :उसने: जीता ।
उस दूसे ढांग में चोरी को दूर :बलपूर्वक: किया ।
राजा की सखियाओं को भी :उस ने: नहीं छोड़ा :ताकि की वे बड़ी होकर गायें न चरें: और चरैयाँ :चरवाहों: को :रोकने के प्रयत्न पर पीटा: ।
हरियाने को भी उस सूरमा ने मात्र पलकें फरके :ही जैसे: जीत लिया ।
:अब: दोनों के दोनों भाई मांझधार में खड़े हैं ।
गोरि, तुम्हारा तत्काल बुलावा भाइयों ने किया है :बुलाया है: ।
तुम हमारे साथ सखिन की झुंड में चलो ।
और तब राजा भाई :रक्षादी: ने नारी के : अन्य लोगों को भी: बुलावा दिया।
राजा भाई ने जाकर :नगरी में: साथ की सखियों को जोड़ा :एकत्रित किया: ।
और रामसिंह :पराक्रमी भगवान:आरव-भूपाल: की सखिन भी संगी प्यारी पहनती है ।
राजा बेटी :सखिन: माणिक्य :कीमती पत्थर: भी उजलाती है:साफ करती है:।
सखिन के साथ के लिए सोलह सौ सखियां संग में हो गयी ।
मैया पर पूरा ध्यान लगाये हुए : उन्हीं के सम्बन्ध में सोचती हुई: बेटी :सखिन: सोहर गाती हुई चली जाती है -
'भाइयों से जाय :मैं: हृदय भर कर भेंट करूंगी : क्योंकि उन्होंने बदला ले लिया है:।
सखियां एक वन चली :और: दूसरा :भी: पार कर गयीं ।
तब तीसरे वन में सखियां मांझधार में पहुंच गयीं ।
दोनों सूरमाओं की नजरें सखिन पर पड़ती हैं ।
वे सूरमा सीता सहोदरी से कहते हैं -
और सीता, किस लिए तुम ने सखियों को लाकर जोड़ा ।
भाई, हमारी गांठ में ज्यादा पैसे नहीं है ।
:अतः : किस तरह आज सखियों का सम्मान रखें:किस तरह उनका आव-भगत करें: ।

इसीलिए भागते जाओ :और: सखियों को अपने :अपने घरों: धर्म द्वारों पर लौटा दो :लौट जाने के लिये कहो: ।

बहिन अकेले केवल हमारे पास आये ।

यही बहिन हम से हृदय भर कर भेंट कर लें ।

भीखा अर्बाधी तो राजा के हुकुम के ताबेदार हैं ।

भीखा भागते जा रहे हैं, जिनके :भीखा के: पृथ्वी पर पैर नहीं लगते हैं :इतना तेज़ दौड़ते हैं: ।

बड़ी विनम्रता के साथ जोड़ कर भीखा सखियों से विनती करते हैं -

"सभी सखियों :तुम: अपने धर्म द्वार :घर: चली जाओ :लौट जाओ: ।

केवल अकेले रक्षाबंधी बहिन हमारे:भाईयों के: पास आये ।"

इस मांझिधार में खड़ी सखियां मन में सोचती हैं ।

ये सखियां मन :ही मन: में विचार करती हैं -

"भाईयों ने आज हमारे सम्मान को पानी :के समान: पतला कर दिया है ।

इसीलिए:हम: मांझिधार से नहीं लौटेंगे ।"

मांझिधार में ये सखियां खड़ी हैं ।

सखियों को यह बहिन समझाती है -

"अरी बहिनों, तुम धर्म द्वार पर :घर ओर: लौट जाओ ।

बहिनों, मैं तुम्हारा सम्मान रखती हूं ।

ओ बहिनों, भाई-बहिन की ममता गाढ़ी :गाढ़: होती है ।

हे बहिने :पूर्व: से मेरे भाई बैरी देश को चले गये थे ।

इसीलिए मैं मांझिधार में भाई से भेंट कर लूं ।"

लेकिन सखियां बहिन की भी एक :भी: बात नहीं मानती हैं ।

सभी सखियां भाईयों की ओर बढ़ती हैं ।

"ओ भाई किस कारणवश हमारे मान-गुमान :घमंड: पतले :कम: कर दिये ।

कन्हैया, इसका ब्यौरा :विवरण: हमें सुनाओ ।"

गोरि से यह कन्हैया कहते हैं-

"बहिन, हमारी गांठ में पर्याप्त पैसे नहीं हैं।
:अतः : किसी का मान-सम्मान किस तरह रखूं ?
तुम से इसीलिए अपने द्वार पर :घरों: को लौटने के लिए :हमने: कहा था।"
लेकिन जब देखा कि सभी बहिनें हमारे पास आ गयीं :तब:-
ऊधा ने गुरु का ध्यान किया, गुरु से सम्बन्ध स्थापित किया।
मांझेदार में व्यापारी ने कंचन की वर्षा :कर: दी।
वह सोना चांदी :बहिनों को सोना: चांदी :झोली: भर-भर कर देकर :उनका: सम्मान करते हैं।
उस ऊधा ने:सब तरह:बहिनों का सम्मान रखा।
दोनों भाई हाथ जोड़ कर बहिनों से विनती करते हैं -
"अरी लाड़ली बहिनों, तुम अपने अपने द्वार पर लौट जाओ।
:मात्र: लाड़ली बहिन :रत्नावती: हमारे पास रुके।"
सब बेटियां अपने अपने द्वार पर लौटती जा रही हैं।
मात्र बहिन अकेले उस मांझेदार में खड़ी है।
बहिन जी :उनकी: आरती उतारती है और गुरुनाम लेती है।
:उसके बाद: राजाबेटी :बहिन-भाई: से भेंट करने के लिए हृदय विलोरित करके लेट गयीं।
गोरी :बहिन: से ये सन्देशा कहते हैं -
"अरी बहिन, हम पर भारी अपराध चढ़ा है :हमने अपराध किया है : अतः
:हमसे: भेंट मत करो :हम भेंट योग्य नहीं हैं:।
:हमने: बांगर देश में बिलखते बच्चे :गायों के छोटे बच्चे: छोड़ दिये हैं :गायें लेकर हम चले आये, अतः वे मर गये :।
अरी बहिन जी, हम पर उनके :मारने का: अपराध चढ़ा है।
इसी से हमारा मुहिम :चढ़ाव:जाना: हिमालय पार में लगता है।"
बहिन-भाई में बातें होती हैं। (४२)
मांझेदार में बहिन :पूर्ण विवरण: सुन लेती है।
ऊधा राजा बेटी :बहिन: को इसीलिए समझाते हैं-

हिमालय पार हमारी मुहीम लग रही है ।
इसीलिए धुनी हिमालय पार लगायेंगे ।
बेटी :बहिन: ने कथा के वचन ध्यान से सुने ।
भाईयों से बहिन कहती है -
अरे माँ के नन्दलाल :मेरे: मना करने पर मान जाओ,
तुम्हारे लिये :ही मैंने: बारह वर्ष कैलाश पर्वत ढारा था :जल चढ़ाया था -
तुम्हारी प्राप्ति के लिए: ।
मैंने रात-दिन तुम्हारे लिए धुनी टारी थी ।
:कभी: कामना से भोला जी पर :मैंने: लाखों फूल चढ़ाये थे ।
तब :जाकर: भोलानाथ ने :प्रसन्न होकर: मुझे वरदान दिया ।
:उन्होंने: मुझे जन्म-जन्म का :मंत्र: लगा दिया :तुम्हें देकर सब कार्य सिद्ध करा
दिया: ।
:अपने मधुर प्रेममय व्यवहार से: चारों ओर से स्नेहित करके अब क्यों जलन
:विरह दु:ख: में डाल जाते हो ।
किसे :मैं: भैया-भैया कह कर गहरी आवाज :जोरों से: बुलाऊंगी :पुकारूंगी: ।
आज इसी से भवन द्वार पर :मेरे जाने के लिए: मना करने पर मान जाओ ।
इसीलिए अरे सुरमा, मेरे वचनों का ख्याल करो ।
मैंने तुम्हारे लिए अरे लाल भांवर :वाले पति: को :तक: छोड़ दिया,
:उसकी परवाह नहीं की तब: अब: किसलिए मुझे छोड़ कर जाते हो ।
विपत्ति के दिनों में मैंने तुम्हारे लिए सुन्दर बाग में साग खिडोरने :कौवा आदि
भगाने का अत्यन्त छोटा: काम किया ।
मेरे स्नेही : अब जब कि: तुम जा रहे हो असाढ़ महीना लग रहा है ।
असाढ़ के बाद सावन लगा जाता है ।
मेरे सुरमा पूर्व देश की वह आनन्द बधाई है जिससे मेघ मूसलाधार बरसते हैं ।
अरे सुरमा लाल, पुष्कर गंगाजल से भर जाते हैं :हिमालय से टकराकर भाप वर्षा
में बदलती है, हिमालय से गंगा भी निकलती है अतः हिमालय का पानी या
उससे स्पर्शित पानी गंगाजल जैसा हुआ: ।

":अत: : दीन दयाल :तुम: घर बैठे हिमालय का तप करना ।"
जब बहिन के इतने वचन :यह कहना: ये कन्हैया सुनते हैं,
"जेठ मास में तहुरी : गर्मी के कारण धूल या पृथ्वी आदि से ताप की अनुभूति :
लगती है ।
धूप अग्नि कारसी : बरसाती: है ।
:सभी: ताल-पोखर :पुष्कर: सावी :सूख जाते: हो जाते हैं :और: गंगाजल के
साथ :भी: सूख जाते हैं ।
:ऐसी स्थिति इसे: हिमालय मत कहिये :क्योंकि: मैं :उसमें: डामर
:सुख पैसी साथ पानी में: लौटती है ।
कोई कैसे :धर्म या: अयोग्य लोग उसमें :अपनी तपस्या: बनाते हैं:करते हैं: ।
बहिन की हिमालय की उत्तरकोण में है ।
राधा बेटी, :जहां: जिस उंगली को :जहां जमीन आदि पर रखी: डालो,
:वो: डालते ही आँचा : जल का ऊपरी रसहीन भाग: :सा: गल जाता है ।
वहीं :ऐसे ही: हिमालय में राधा बेटी :हम: बरोबर होकें :तप करेंगे:।
राधा बेटी सुरपाल से बात कहती है -
"अरे सुरमा मेरा उत्तर सुनो -
:जैसे: वरे कटे हुए वृक्ष :पुन:: हरे नहीं होते, :और: मरे हुए :मृतक: उत्तर
:बोलते: नहीं देते हैं ।
:वैसे ही: छिन-छिन के :किसके: भाई हिमालय से :पुन: द लौट कर भवन द्वार
:घर में: आये हैं ?
इसीलिए :तुम लोग मेरे: भवन द्वार पर मनाने से मान जाओ ।"
राधाबेटी भाईयों को समझाती है -
"अरे कन्हैया, तुम किसलिए राग :क्रोध: कर्ष :वह: रहे हो ?
तुम्हारे बदले में हिमालय उत्तरकोण :चली: जाऊंगी ।"
बहिन के वचनों को ये कन्हैया सुन लेते हैं ।
गौरी को बार-बार ये कन्हैया समझाते हैं -
":कैलाश तप में: रास्ते-रास्ते :पग-पग: में अवरोध :उत्पन्न: होता है,

पांव :पैर: पुजाक : भात का भाड़ पैदा: बन जाता है।
भाई के बदले :स्थान में: बहिन हिमालय उत्तरकोण का तप करे : यह शोभा नहीं-
देता है:।
राधाबेटी, इसी से हमारी बुद्धि में हिमालय पार लगती है।"
राधाबेटी उस ऊधा से कहती है -
"अरे निर्मोही, तुमने क्यों कमलापत को स्वयं गोद में खिलाया ?
क्यों लाड़ :स्नेह: से :उसका: नाम कमलापत रखा।
:लेकिन: आज :अब: :विवाह: कार्य संभालने :करने: वाला भाई वह :इस: धरती
लोक में :कुछ: नहीं दीखता है।
अरे :कोई भी: दूसरा :भाई: मंडप के मध्य हल्दी[१४४] लगाने वाला नहीं दिखता है।
कमलापत :अब: दोनों हाथ हल्दी में डाले बैठी है,
:इस भी ऐसी स्थिति में: अभी तुम्हें उत्तरकोण का हिमालय दिखता है।
इसीलिए भाता के नन्दलाल :मेरे: मना करने पर मान जाओ।"
मांझिवार में भाई-बहन में झगड़ा होता है।
:भाई कहते हैं: -" बहिन जी, जिस दिन कमलापत के सलोने काज को :तुम:रचना,
:उस दिन: नीम के पेड़ को न्योता भेज देना।
उस दिन हम सलोने काज की एक शपथ :कसम ले: :आकर: सवांरेंगे :करूंगा:।
लेकिन :इस बार: बांगर :के: देश के बांभर नहीं मारेंगे।"
मांझिवार में भाई की ममता बहिन को नहीं छूटती है।
:वह: बहाना बनाते हैं: बहिन से वे कहते हैं -
"बहिन जी प्यास के मारे :कारण: :हमारे: होठों में पपड़ी पड़ रही है,
:सूख जा रहे हैं:।
आंखों में अंधेरा सा लगता है,
इसीलिए शीत :की: ओर से जाकर पानी भर लाइये।"
राधा बेटी ने कमलापत की लीला की लगाम पकड़ा दी।
कमलापत से राधाबेटी कहती है -
"अरी कमलापत, लीला की राह मत छोड़ना,

नहीं तो :अन्यथा: मँझधार में कलपती मामा छल कर देंगे ।'
राजाबेटी झील की ओर जाती है ।
राजाबेटी एक वन चली, :और: दूसरा :वन भी: पार कर गयी ।
तीसरे वन में :वह: झील द्वार पहुंच गयी ।
राजाबेटी झील में मल-मल कर :देह को रगड़ कर: स्नान करती है ।
बहिन जी ने पहला लोटा सूर्यनारायण को द्वारा :चढ़ाया: ।
दूसरा लोटा बालाजी महाराज :दक्षिण में विष्णु के अवतार माने जाने वाले-देवता: को चढ़ाया ।
बहिन जी ने तीसरा लोटा सीता जी के नाम पर चढ़ाया ।
(८५)
चौथे, लोटे को :उन्होंने: गठरियों के बीच में रख लिया ।
लाड़ली बहिन झील की ओर से चली आ रही है ।
:गायक कहता है: झील की बातें :तो: झील में रह गयीं :अब: आगे का हाल सुनिये -
:वहां: वह दुष्ट मान्धी से कहते हैं -
'अरी मान्धी, घोड़ा का ऐंठा :कोड़ा: :तो: घुड़साल में टंगा :रह गया है: ।
बेटी, इसीलिए तुम भागती हुई घर जाओ ।'
मामा के जब इतने वचन बेटी सुनती है -
'अरे मामा, मँझधार में ऐसी झूठी बातें मत करो ।
ऐंठा तो सीता के दाहिने सवार की तरफ टंगा है ।'
इतने में उसे :कोड़ा को: धरती में :उन्होंने: किसलिये छोड़ दिया ?
:इसीलिये कि: - वो ऐंठा विषैला नाग बन गया ।
कमलापत ने डर कर सीता की रास छोड़ दी ।
:उन्होंने अवसर मिलते ही: अंगूरी चाल से घोड़ा को बढ़ा दिया ।
झील पार से बेटी चली आ रही है ।
:संदेहवश: बहिन जी ऊंची जगह पर चढ़ कर चारों ओर से :भाइयों को: देखती है ।
:लेकिन: बहिन को न :तो: सीता दीखती है और :न: सीता के सवार ही ।
बेचारी दीन कमलापत मँझधार में बिलख रही है ।

:क्षोभ और दुःख से: बहिन भरे हुए लोटा :ज़मीन पर: पटक दिया :और:
पृथ्वी पर लोट कर विलाप करती है -
"अरे दीनदयाल, विधाता :तुमने: मेरे लिए यह क्या रचा :किया: ।
आज कलवती :भाई: मुझ से मझधार में छल कर गये ।
ओरी बेटी, तुझ पर भादों की गाज गिरती :और: तू मर जाती :तो अच्छा रहता : ।
तुम्हारे नाम :जन्म: से मैं जन्म की बांझ ही होती :तो बेहतर था: ।
तूने सीता के साथ की राह को किस तरह छोड़ा ?
बेटी, यह बात मुझे सुनाओ ।"
गौरी :मां: से कमलापत बेटी कहती है -
"मामाजी, उन्होंने रेठा को [४६] मिर्चीला नाम बना दिया,
:इसीलिये: डर के कारण :अन्ततः: सीता के साथ की राह :मुझ से: छूट गयी ।
मामा ने :बलात: संगुरी चाल से घोड़ा को बढ़ा दिया ।
:रखवाली: बेटी ने उस कमलापत को अपनी गोद :में: ले लिया ।
बेटी वन, झाड़ी, झांग में रोती जाती है ।
बेटी एक वन चली, :और: दूसरा पार कर गयी ।
तीसरे वन में बहिन नीम के पास पहुंची -
"ओरी नीम, तू दो-दो भाइयों के पाट :चक्की के दो भागों में कोई एक: में
टेढ़ी क्यों :उगी: थी ।
अरी नीम, भैया तुझे सीता :घोड़े: पर रख कर लाये थे ।
मैंने अच्छा दूध नीम तुझे पिलाया था ।
फिर कैसे आज तू ने भाइयों को अपनी तरफ से निकाल दिया :रोका क्यों नहीं:
:मेरे: शाप देने से नीम तुम जड़ से विहीन हो जाओगी ।"
गौरी को यह नीम उत्तर देती है -
"व्यर्थ के लिए बहिन जी :तुम: झाड़ी-झांग में भ्रमती हो : परेशान होती हो:।
हिमालय पार दोनों के दोनों भाई चले गये हैं ।
बहिन :तुम: मामा की :राज्य की: ओर :अपने: घर की तरफ लौट जाओ ।"

राधाबेटी गायों के वन, झाड़ी, ढांग में :भाइयों के लिए: गयी ।
राधाबेटी एक वन चली, :और: दूसरा :भी: पार कर गयी ।
बहिन जी तीसरे वन में पहाड़ी की ओर पहुंची ।
वह पहाड़ी को बहिन जी :अपनी: बात सुनाती है -
"गोरी पहाड़ी, तुझे मैं छिन भी का शाप दे दूंगी ।
:क्योंकि: मेरे भाइयों को तूने अपनी ओट में छिपा लिया है ।
पहाड़ी तुझे [illegible] :बार: मैं शाप दे दूंगी :तो तू: नीर की धारा :बन कर: बैठे बह जायेगी ।"
पहाड़ी ने जिस समय बहिन की बातों को सुना
वह पहाड़ी गोरी को बदले में उत्तर देती है -
"बहिन जी, :तुम: मेरी ओर :ऊपर: खड़ी हो जाइये :आजाइये: ।
मैं नीर की धार की तरह तुम्हारे सामने झुक जाती हूं : सब कुछ अपना दिखा देती हूं : ।
:आप: नजर भर कर अपने भाइयों को देख लीजिये :कि वे यहां हैं या नहीं:।
:किसी: एक :के: ही शाप से :मैं: इस मझधार में पड़ दुःखी :अपनी शून्यता, कठोरता, अचलता के कारण: हूं ।
:तुम्हारी जैसी: लाड़ली सीधी बहिन के शाप से मेरी भला :क्या: दुर्गत हो जायेगी : कहना कठिन है: ।
हां :लेकिन वास्तव में: उस जैसी तुम्हारे भाइयों की जोड़ी हिमालय पार चली गयी है ।
हमारी ओर :तरफ: बेटी :तुम: व्यर्थ में ही भ्रमाती हो :परेशान होती हो:।
अपने हरे-भरे टोड़ा, झांक को बेटी तुम लौट जाओ ।
बेटी की आशा निराश हो जाती है ।
उस ऊंची-चौड़ी घाटी में बहिन जी रोने लगी ।
तब पक्षी :एक: को बहिन पर मोह :दया: आ गयी : उसके कारण विलाप से: ।
अपने काली-झांक में बेटी तब लौट आयी ।

राजा बेटी एक वन चली, :और: दूसरा :भी पार गयी ।
तीसरे वन में हरियल टोड़ा कांठ में पहुंच गयी ।
:वहां: जब कांठ के लोगों की दृष्टि बछिन पर पड़ती है -
"बादी : एक हिन्दु जाति जो दोना-पत्तल बनाने का काम करती है, यहां नीच-जाति के गायक के रूप में: अभागी बछिन हमारे द्वार :की ओर: चली आ रही है ।
इसने मां-बाप को जन्म से :कम उम्र में: खा लिया था :मर गये थे और अपनी आंखों के: सामने भाइयों को हिमालय में गिरते :गलने-मरने: :के लिए छोड़: आयी है ।"
कांठ के कुटुम्बों ने :घरों में: वज्र किवाड़ लगा लिये ।
:रखवाली घर में न था और इसीलिए दरवाजे चोरों से बन्द कर लिये: ।
बेटी गली-गली में सिसकती फिरती है, गहरी :ज़ोरों की: आवाज़ में :लोगों को: बुलाती जाती है ।
:लेकिन: बेटी को :कोई भी: हरियल कांठ में उत्तर नहीं देता है ।
टोड़ा-कांठ में बछिन पानी की पतली हो गयी :सम्मान हीन हो गयी: ।
बछिन की कोई जरा भी बात नहीं पूछता है ।
वही मैचल के द्वार पर राजा बेटी चली जाती है ।
मैचल की नजर बछिन पर पड़ती है ।
मैचल ने बछिन :रखवाली: का पूरा सम्मान रखा :किया: ।
वह मैचल गोरी से कहते हैं-
(४८)
"जिस दिन तुम ६४ कन्यादान का सलोना काज रचना,
उस दिन गोरी, मुझे न्योता बता देना ।
तुम्हारी बेटी के उस दिन :मैं: उसीने काज संवारुंगा ।"
मैचल के इन वचनों को गोरी सुनती है ।

: दूसरी ओर :

वे ऊधा की हिमालय पार चले गये ।
कन्हैया एक वन चले, :और: दूसरा पार कर गये ।

तीसरे दिन में कन्हैया हिमालय पार पहुंचे।
सुरमा सीता पर से उतर कर जमीन पर आये।
बरगद की छांह में सीता को खड़ा किया।
:बाद में: उन सुरमा ने बड़े बरगद वृक्ष से सीता को बांधा।
कन्हैया ने धन गुरली को सरका : ऊपर को सीधे खड़ा हुआ पेड़: डांग :घना-जंगल: में टांगा।
वन, झाड़ी, डांग में सुरमा ने स्थली को बटोरा।
उन्होंने पंचवटी को तैयार किया।
:उन्होंने: हिमालय पार में तेली : धूप आदि की योगियों की: धूनी ठठायी :तैयार की:।
जिन्होंने मुंज की लंगोटी लगाई, अंग में भभूत चढ़ायी,
:वे: सुरमा हिमालय पार में तपस्वी बन गये हैं।
उन कन्हैया ने अपने हाथों में तुलसी की माला ले ली।
गुरु का नाम लेकर सुरमा माला फेरते हैं।
:उन्होंने: पहली माला को फेरते समय माता-पिता के शब्द :नाम: को संवारा :स्मरण किया:।
दूसरी माला के फेरने पर गुरु भाता के नाम का बखान किया,
:उनका गुणगान किया:।
:उनके: तीसरे माला के फेरते ही हिमालय में आग लग गयी।
तपियों से यह हिमालय हाथ जोड़ कर विनती करता है -

"तपियों, किस देश से तुम आये हो और कहां :तुम्हें: जाना है?
तुमने और किसलिये मेरे पार धुनी रमायी है।
मेरे जीव-जन्तु तुम्हारे तप के मारे :प्रभाव से, तेज से: मरे जाते हैं।
:अतः: मेरे पार में तपियों ऐसी माला मत फेरो।"
जिस समय उन सुरमाओं ने हिमालय की बात सुनी,
तब :वे: तपी हिमालय से कहते हैं -

"पूर्व दिशा से हमारा आना तुम्हारी ओर हुआ है।
राजा जी :शिव के ससुर: हम पर (४८) भारी अपराध चढ़ा है :लगा है:।
इसीलिये :हम: तुम्हारे पास :प्रायश्चित्त के लिये: धूनी लगाये हैं।"
राजा जी हाथ जोड़ कर तपस्वियों से विनती करता है।
तपस्वियों से राजा जी कहते हैं-
"हमारे पास :तुम: ऐसी माला मत फेरो : ऐसा तप नहीं करो:।
हंसों ने कमलनाल :जिसमें दूध रहता है: छोड़ दिया है, :और: समुद्र ने :भी: :अपनी: मर्यादा छोड़ दी है।"

:तप के कारण स्थान परिवर्तन की विवश: हंस :हिमालय से: उड़ चले : और-थक कर: ऊँचे स्थान पर विश्राम करते हैं।
वे सीधे टोडा फाँक के मार्ग को पकड़ते हैं।
आसन पर राजाबेटी :[illegible]: बैठी थी।
हंसों से वह बहिन पूछती है --
"हंसों, क्या तुम्हारे देश में सूखा :अकाल: पड़ गया है, :या: :वहां: बहुत खराब समय आ गया है।
तुमने भाई, मोती झील क्यों छोड़ दीए ?
वे हंस गोरी के इतने वचन सुनते हैं।
उस समय हंस गोरी से कहते हैं -
"बहिन जी, हमारे देश में न तो सूखा पड़ा है,
:और: न बहिन जी बुरा समय :ही: आया है।
हाँ, यो तपी :तपस्वी: बहिन जी, हिमालय में बैठे हैं।
उनके तप के मारे :प्रभाव से: हिमालय में आग लग गयी है।
हमारी मोती झील :उनके: तप के मारे :कारण: छूट गयी है।
बहिन जी, इसीलिये भाग कर :हम: तुम्हारे देश में आये हैं।"
इस की ओर में लाड़ली बहिन को भाईयों की सुधि :याद: आ गयी।

राजा बेटी को:पूर्ण:विश्वास हुआ -

'क्या मेरे भाईयों ने हिमालय पर धुनी रमायी है ?

अरे हंसों मुझे हिमालय (५०) पार ले चलो ।

मैं सरोवर पार :मोती पहिन: तपियों के दर्शन कर लूं ।'

हंस बहिन से पलट कर सवाल करते हैं -

'तुम कचनार की तरह भारी शरीर की हो ।

किस तरह:हम : मैं हिमालय पार तपियों से मिला :दें: दूं ?'

प्रत्युत्तर में लाड़ली बहिन हंस को प्रबोधती है -

'हंस, तपियों के लिए :मैं: छोटा शरीर बनाये लेती हूं :सूक्ष्म रूप धारण किये लेती हूं: ।

तुम्हारे पंखों में हंस :मैं: समा जाऊंगी ।

मोहे तपियों से हिमालय पार में :मेरी: भेंट करा दो ।'

राजाबेटी भाईयों के लिये प्यारी गेंदा फूल :पीली तितली: बन गयीं ।

हंस लौट कर हिमालय पार चले जाते हैं ।

हंसों के संग में राजाबेटी :भी: साथ में चली जाती है ।

:गायक कहता है:'यहाँ की बातें यहीं :रहने दो: और :आगे की पुकार की: बात सुनो.....'

तपियों ने समथा जी :हिमालय: में तीन दिन की अवधि का करार :ठौ: करा लिया -

'अरे तपियों, मेरी चार तीन दिनों :तक: माला नहीं फेरना ।'

समथा जी भाग कर हरी दरबार में पहुंचे ।

समथा जी हाथ जोड़ कर शिव जी से विनती करते हैं -

:कि: अरे उनकी तपस्या के कारण मेरी मर्यादा छूट गयी है ।

इसीलिये हरी दरबार में :उनका: तत्काल बुलावा करा लीजिये ।'

और उन सुरमाओं के लिये आसमान से विमान आ गये -

'अरे तपियों, विमान के बीच में बैठो,

उस हरी दरबार में तुम्हारा बुलावा होता है।"
इसीलिये सभी विमान में बैठ गये।
वे कन्हैया मीरा बहुनी से कहते हैं -
"ओ मीरा, तुम हिमालय पार इन्हीं टापते रहना।
तब तक :अब: हरी दरबार में हमारा बुलावा हो रहा है।"
बड़ी कातरता से मीरा सखोंकी हाथ जोड़ कर विनती करते हैं -
"अरे कान्हा, मैं छोटी उम्र से ही तुम्हारे संग-साथ में रहा हूं।
हमने :मैंने: यहां :पृथ्वी पर: तुम्हारे घोड़े :तक: की लीद साफ की थी,
:तुम्हारे लिये सब से छोटा काम तक किया: ।

:बालों का: कालापन चला गया, शरीर में सफेदी आ गयी :बुढ़ापा तक सेवा करते-करते आ गया: ।
स्वामी, तुम्हारे संग :मैं: मैं भी हरी दरबार को देख लूं।
तपस्वियों, मुझे हिमालय पार :अकेला: मत छोड़ना।"
मीरा को :भी: उन तपस्वियों ने हिमालय के बीच में बैठाया।
हरी दरबार में :के लिये: तपस्वियों का चलना होता है।
जब लाड़ली बहिन भाइयों के संग में साथ चली जाती है।
"भैया", कह कर बहिन भी जोरों से बुलाती है।
बहिन को भाई हिमालय पार में नहीं दिखते हैं तो
राजबेटी हिम :ध्यानमग्न: ओर में रोने लगती है -
"वन, झाड़ी, ढांग में मैं भाइयों की आशा में भागती आयी हूं।
लेकिन भाई तो हरी दरबार चले गये हैं।"
आशा की मारी बेटी :आशान्वित: अब निराश हो जाती है।
निराश बेटी जोरों से रोती है।
गोरी आशावश हिमालय पार भागती आयी है।
:लेकिन यहां आकर: हिमालय में बेटी निराश हो जाती है।

बेटी अब हाथ जोड़ कर हंसों से विनती करती है -
"हंस मैं बहुत अभागी हूं,
इसीलिये हिमालय पार :मेरी: भाइयों से भेंट नहीं हो सकी।
इसीलिये मेरे हंस :तुम: काशी कांक के लिये लौटा दो।
मैं व्यर्थ में ही हिमालय पार भ्रमित हुई।"
इसीलिये बहिन की क्यारी गेंदा (५२) फूल :गेंदा: बन गयीं।
बेटी अब हंसों के पंख में समा जाती है।
इसीलिये हंस एक वन चले, :और: दूसरा :भी: पार कर गये।
तीसरे वन में हंस उस समय काशी टोड़ा कांक में पहुंचे।
:वे: बेटी को :उसके: दरवाजे पर उतारते हैं।
राजाबेटी अपने रंगमहल में उतरती है।
हंस अपनी मोती कांखकी :के लिये: लौट गये।
घरी के साथ दोनों भाई चौपड़ खेलने लगे।
उनके बारह वर्ष खेलते -खेलते बीत गये।
राजाबेटी :रजवादी: ने यहां कांक में सलोना काज :व्याह: रचा।
:उसने: उस कमलापत के सलोने काज रच दिये।
बेटी इसीलिये :पूर्व स्मरण कर: न्योता :निमंत्रण: लेकर नीम के पेड़ के पास जाती है।
राजा बेटी एक वन चली, :और: दूसरा :भी: पार कर गयी।
तीसरे वन में बहिन नीम की ओर पहुंची।
"ओरी नीम, मैं बारम्बार तेरे लिये न्योता लायी हूं।
इसीलिये तुम भाइयों की ओर :पास: मेरा न्योता भेज देना।
दूज को मढ़वा :मंडप: है, भैया तीज को भायना है।
चौथ को धर्म द्वार पर उवावट होगी।
नीम, बिना मामा के मंढवा :मंडप: सूना लगता है।
इसीलिये मेरी ओर से भाइयों को न्योता दे देना।"

गीम गोरी से कहती है -
"सखिन जी, तुम जाकर अपने सलोने काज को संवारो।
भात के पीसने :खाने: के दिन तक भाई मंढ़वे :मंडप: में आ जायेंगे।
इसीलिये :निश्चिन्तता से: बेटी के सलोने काज को संवारो :करो:।"
जब सखिन जी ने गीम के इस उत्तर को सुना।
:तब: बेटी को गीम का विश्वास :वचन का: आ गया :हो गया:।
:इसलिये फिर शंका करती है: -" सब कन्हैया : क्या अब भी: मुझ अभागिन का सलोना काज संवारेंगे :करेंगे:।
गीम दुबारा समझाती है -:और कहती है: -
"भवानी :तुम:, अपने काशी टोड़ा फांक को :मैं: खोट जाओ।"
भवानी उस टोड़ा फांक को लौटती है।
:भाइयों को: बारह साल चौपड़ खेलते-खेलते हो गये।
उस सुरमा ने बेरहमें:साल: की शरण ली :बेरहवां साल आया:।
सुरमा के लगे हुए पासे हरी दरबार में कट गये :हार गये:।
:वे कहते हैं: -" हो पीखा [illegible] :उसका: कारण बतलाओ,
किसलिये:हमारे:लगे हुए पासे हरी दरबार में कट गये ?
और खेल का:पूरी बात का: कारण :हमें: पीखा सुना दो।"
तब पीखा कथा से उत्तर देते हैं -
"अरे कन्हैया :क्या: उस दिन की याद बिसर गयी :भूल गयी:
जिस दिन :तुमने: मांझधार में प्रतिज्ञा की थी।
:अब: सखिन ने राधाबेटी :कमलापत: के सलोने काज रचे हैं।
इन दिनों गान्धी मंडप में भात :के दिनों के: बीच :में: है।
इसीलिये [illegible] हरी दरबार में तुम्हारे पासे कट गये हैं।"
उस सुरमा ने जब पीखा का :यह: जवाब सुना।
:तब: पीखा [illegible] को :उन्होंने: कड़ी हुकम दिया -
(५४)
"हो पीखा, तुम काशी फांक को जाओ।

वहां से: उस गोरी बहिन की खबर लेते आओ ।
क्यों कि: अब मंडवां गड़ना है, :और: अब सजन पीर का द्वार होगा ।
इसीलिए बीरा बहिन की ओर चले जाओ ।"
:बीरा कहते हैं:-" अरे ऊधा जी, मेरी गांठ में पर्याप्त पैसे नहीं हैं ।
अरे ऊधा जी, भूखा :भूख मिटाने: के लिये पठानी पान नहीं है :पठानी लोध :
एक जंगली पेड़ जिसकी छाल और पत्तियां रंगने तथा लकड़ी और फूल दवा के
काम आते हैं: ।
रात के :सोने के: लिये बिछौना भी नहीं है ।
:मैं: किस तरह जाकर गोरी बहन की खबर लूं ?
:माई कहती है:-" :तुम: पांव के लिये पांवड़ी ले लो, गांठ :खर्च: के लिये
:पर्याप्त: काफी पैसे ले लो ।
रात के लिये सेमल का मांचा :बनाया: हुआ बिछौना ले लो ।
:यह सब लेकर: मात्र :तुम: काली टीड़ा फांक की खबर लेते लाना ।"
बीरा सीधे उधर देख :दिशा: को पकड़ गये :चल दिये: ।
ऊधा एक बन चले, दूसरा पार कर गये ।
अरे तीसरे बन में बीरा सब्ज:मोती: बाग में पहुंच गये ।
वहां के सूखा हरे :भरे: होने लगे, डाली में :कली: फूल फूलने लगीं ।
इस शुभ संकेत से बहिन को अरे :भाईयों के: आने का पूरा विश्वास हो गया ।
:सखाती सोचती है: -" मेरे सुरमा मोती बाग में आ गये हैं,
मोती बाग अभी तो :पेड़: हरे हो गये हैं ।"
बीरा बरोंसी उस समय बहिन के द्वार पर पहुंचे ।
वह सुरमा सुबह समाचार सभी द्वार पर :बहिन से: पूछते हैं -
":उसके बाद: बहिन जी अब मंडप में मायन : विवाह में मातृ पूजन का दिन: है,
अब सजन द्वार :बेटी को: पहुंचाना होगा :अब विदाई होगी: ।
सत्य ब्यौरा :सब विवरण: बहिन जी :हमें: सुना दीजिये ।
:क्योंकि: मैं तुम्हारे कार्य का खबर देने वाला :दूत: हूं ।

(५५)

सखिन :सब: बात सुनाना :बताना:

:सखिन कहती है:-" दुख को संकट है, मायन है, बीच को,

इसके बाद डगन बार की पहुंच :विदाई: होगी ।

यही ब्यौरा :बात: उस कन्या को सुनाना :बताना: ।"

मीरा खजौंदी हरी दरबार को जा रहे हैं ।

मीरा एक बन गये, दूसरा पार कर गये ।

तीसरे बन में :के बाद: मीरा हरी दरबार पहुंचे ।

मीरा हाथ जोड़ कर नाईयों से यह विनती करते हैं -

"दुख को संकट है मायन है बीच को, बीच को डगन :के बाद: पौढ़ने :लेटने: का बार :बार: होगा ।

कही है : इसी अनुसार: कन्या जी :उस: सखिन के सलौने काज को संवारना ।"

हाथ जोड़ कर सभी हरी से बारम्बार विनती करते हैं -

"मुके :हमें: सखिन के देश में जाना है ।

उस मान्धी की शादी है ।"

हरी ने कही :अनुसार उनसे: चार दिन की अवधि में लौटने का करार :शर्त: किया :की: -

"चौथे:दिन:से पांचवां:दिन:न लगाना :करना: नहीं तो

तुम्हें हमारे दरबार का रास्ता नहीं मिलेगा : मार्ग भ्रष्ट हो जाओगे:"

हरि के इन वचनों को उन कन्या जी ने सुन लिया ।

सुरमा का हरी दरबार से उतरना होता है ।

:उन्होंने: जाकर मान्धी का काज :विवाह कार्य: संवारा :किया: ।

:लेकिन इस कार्य में : उन कन्या को पांच दिन बीत गये थे ।

इसीलिए हरी दरबार का रास्ता भूल गये : मार्ग भ्रष्ट हो गये: ।

--- ० ---

समाप्त